



# संकट से परिवर्तन तक:



जस्ट ट्रांज़िशन क्या है?



बिंदराई इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च स्टडी एंड एक्शन (बिरसा)

लेखक: काली अकुनो, केटी सैंडवेल, लीडा फोरेरो व जेरॉन ब्राउन

अनुकृति संपादक: बेन कन्निंघम

अभिन्यास और बनावट: बॉस कोएनेग्रैच्ट, डिज़ाइन एक्शन कलेक्टिव के सहयोग से

फ़ोटो क्रेडिट कवर छवि, पृष्ठ 3, पृष्ठ 14: ग्रासरूट्स ग्लोबल जस्टिस

अन्यथा उल्लेख न कि गयी छवियाँ, डिज़ाइन एक्शन कलेक्टिव द्वारा

आभार: उत्तरी अफ्रीका में जस्ट ट्रांज़िशन और बांधों से प्रभावित लोगों के, ब्राजीलियाई आंदोलन पर अनुभागों में उनके योगदान के लिए लेखक हमज़ा हामोचेन और त्वेना मासो के बहुत आभारी हैं। लेखक जोस ब्रावो, जो ब्रेंट, जेनिफर फ्रेंको, टॉम गोल्डटूथ, हमज़ा हामोचेन, क्लो हेंसन, एंजेला माहेचा, सारा मेर्शा, कैरिन नानसेन, पिएत्जे वर्वेस्ट, डैनियल चावेज़ और सिंडी विस्नर को इस प्रकाशन के ड्राफ्ट पर उनकी उपयोगी और व्यावहारिक टिप्पणियों के लिए और उन सभी को धन्यवाद जिन्होंने लेखन प्रक्रिया के दौरान हमारे साथ अपना ज्ञान साझा किया। शेष किसी भी त्रुटि की जिम्मेदारी स्वयं लेखक की है।

हम इस प्राइमर को सिर्फ ट्रांज़िशन ढांचे और अभिव्यक्ति के व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान के रूप में पेश करते हैं। विशेष रूप से, हम जस्ट ट्रांज़िशन एलायंस, इंडिजेनस एनवायर्नमेंटल नेटवर्क, क्लाइमेट जस्टिस एलायंस, मूवमेंट जेनरेशन, द लेबर नेटवर्क फॉर सस्टेनेबिलिटी, ट्रेड यूनियन फॉर एनर्जी डेमोक्रेसी और अन्य लोगों के काम का सम्मान करते हैं। कृपया इनमें से कई संस्थाओं द्वारा, जस्ट ट्रांज़िशन पर संसाधनों (अंग्रेजी में) के लिए पीछे के कवर पृष्ठ का अंदर का भाग देखें।

रिपोर्ट की सामग्री को गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए उद्भूत या पुन: प्रस्तुत किया जा सकता है, बशर्ते कि जानकारी का स्रोत उचित रूप से उद्भूत किया गया हो। टी. एन. आई. (TNI) और जी. जी. जे. (GGJ) उस पाठ की एक प्रति या लिंक प्राप्त करने की सराहना करेंगे, जिसमें इस दस्तावेज़ का उपयोग या उद्भूत किया गया है। कृपया ध्यान दें कि कुछ छिवयों का कॉपीराइट कहीं और हो सकता है और उन छिवयों की कॉपीराइट शर्तें मूल स्रोत की कॉपीराइट शर्तों पर आधारित होनी चाहिए। http://tni.org/copyright

ट्रांसनेशनल इंस्टीट्यट व ग्रासरूट्स ग्लोबल जस्टिस द्वारा सह-प्रकाशित, सितम्बर 2022

हिंदी अनुवाद एवं लेआउट - अयाज़ अहमद

बिंदराई इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च स्टडी एंड एक्शन (बिरसा), गद्दीटोला, चाईबासा, पश्चिम सिंहभूम, झारखंड द्वारा हिंदी अनुवाद और पुनः प्रकाशित: अगस्त 2023 केवल निजी वितरण के लिए

"KP 2.13.2 - संकट से परिवर्तन तक का हिन्दी संस्करण"

यह अनुवाद अयाज अहमद द्वारा बिंदराई इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च स्टडी एंड एक्शन ने स्वेच्छा से किया है और मूल रूप से अंग्रेजी में लिखा गया था [https://ggjalliance.org/wp-content/uploads/2022/09/JT\_Primer\_English\_WEB.pdf]। भाषा की बारीकियों और सभी को दोबारा जांचने की सीमित क्षमता के कारण अनुवाद, यदि उद्धत या संदर्भित किया जा रहा हो तो कृपया मूल स्रोत देखें।"



# विषय-सूची

परिचय	6
हम यहाँ कैसे पहुंचे?	8
आज हम कहाँ खड़े हैं?	16
जस्ट ट्रांज़िशन क्या है?	27
समुदाय आज जस्ट ट्रांज़िशन के दृष्टिकोण को कैसे व्यवहार में ला रहे हैं?	40
जस्ट ट्रांज़िशन का भविष्य क्या है?	47
जस्ट ट्रांज़िशन पर अध्ययन और प्रेरणा	48
के श्रोत:	
एंडनोट्स	49

हम गहन बदलाव के युग से गुजर रहे हैं। राजनीतिक उथल-पुथल आज आम है। आर्थिक असमानता बढ़ रही है। दुनिया भर में लोग, जलवायु आपात स्थितियों और टकराव के कारण विस्थापित हो रहे हैं। नस्लवाद, ज़ेनोफ़ोबिया और धार्मिक असहिष्णुता बढ़ रही है। कोविड-19 महामारी ने हमारी वर्तमान आर्थिक और सामाजिक प्रणालियों के अन्याय और अतार्किकता पर नई रोशनी डाली है।

आज हम जिन संकटों का सामना कर रहे हैं वे सामाजिक और राजनीतिक हैं, लेकिन ये और भी गहरे हैं। पिछले 250 वर्षों में दुनिया पर थोपी गई उत्पादन प्रणाली के परिणामस्वरूप पृथ्वी की जीवनदायिनी प्रणालियाँ खतरे में हैं। पेट्रो-रसायनों, लाभ से प्रेरित और श्रमिकों और प्राकृतिक प्रणालियों दोनों के अति-शोषण पर आधारित, उत्पादन के इस तरीके ने कार्बनचक्र सहित वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलन में रखने वाले कई चक्रों को बाधित कर दिया है।

इस चक्र में परिवर्तन चरम जलवायु घटनाओं जैसे की अत्यधिक सूखे और बड़े पैमाने पर जंगल की आग, से लेकर अधिक व लगातार और गंभीर तुफान और टाइफुन के रूप में प्रकट होते हैं। जीवन भी धीरे धीरे ख़त्म हो रहा है। हम अपने ग्रह की छठी व्यापक विलुप्ति की घटना के बीच में हैं: अनुमान है कि प्रति वर्ष जलवायु परिवर्तन, प्रदुषण और आवास विनाश के कारण 200 से 2000 प्रजातियाँ नष्ट हो रही हैं।

औद्योगिक पुंजीवादी व्यवस्था के पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव लंबे समय से, हाशिये पर रहने वाले समुदायों के लिए स्पष्ट हैं, जो उत्पादन के कचरे के ढेर में रहने के लिए मजबूर हैं, जबिक उनके संसाधनों को कच्चे माल के नाम पर लूट लिया जाता है। हालाँकि, आज यह प्रणालीगत प्रभाव तेजी से सभी को दिखाई दे रहा हैं। हमारे बहुमुल्य ग्रह पर मानवता और जटिल जीवन को बचाने के लिए, हमें एक बड़े पैमाने पर पथ परिवर्तन की आवश्यकता है। हमे ज़रूरत है जस्ट ट्रांज़िशन की। सरल शब्दों में, जस्ट ट्रांज़िशन वास्तव में लोकतांत्रिक तरीकों से, शोषण, निष्कर्षण और अलगाव से दूर और उत्पादन और प्रजनन की प्रणालियों की ओर एक प्रणालीगत मोड़ है, जो मानव कल्याण और पारिस्थितिक तंत्र के पुनर्जनन पर केंद्रित है। जस्ट ट्रांज़िशन, जैसा कि हम इसकी कल्पना करते हैं, जीवाश्म ईंधन से नवीकरणीय या हरित ऊर्जा स्रोतों की ओर, एक बदलाव से कहीं अधिक है।

बल्कि, यह हमारे समाज का एक गहन बदलाव है जो मानवता को पृथ्वी, इसकी पारिस्थितिक प्रणालियों, बहुतायत प्रजातियों के साथ एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन में रखना चाहता है जिनके साथ हम इस नाजुक ग्रह को साझा करते हैं। यह सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों और प्रथाओं पर निर्भर करेगा जो एकजुटता, सहयोग, साझाकरण और देखभाल

पर जोर देते हैं। यह प्रतिस्पर्धा, संघर्ष, निजीकरण, संचय और अति-व्यक्तिवाद, को दरकिनार करता है।

यह प्राइमर यह पता लगाने का प्रयास करता है कि खुद को और अपने सामाजिक आंदोलनों को, जस्ट ट्रांज़िशन की ओर उन्मुख करना क्यों जरूरी है और हम सचेत रूप से और जानबुझकर निष्क्रिय और विनाशकारी प्रणालियों से कैसे दूर जा सकते हैं, जो हमें विलुप्त होने की ओर ले जा रहे हैं। हम सामाजिक संबंधों की नई प्रणालियों की ओर कैसे आगे बढ सकते हैं, जो हमें जीवित रहने और जलवायु संकट से उभरने और ग्रह के छठे सामुहिक विलोपन को पलटने में मदद करेगी।

यह प्राइमर लेखकों और उनके संगठनों के बीच सोच की एक सामृहिक प्रक्रिया का उत्पाद है, जो दुनिया भर के सामाजिक आंदोलनों, संगठनों और समुदायों के साथ जस्ट ट्रांज़िशन की अवधारणा पर अलग-अलग तरीकों से काम कर रहे हैं और यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि यह सरल लेकिन शक्तिशाली विचार लोगों को वास्तविक परिवर्तन के लिए संगठित होने में कैसे मदद कर सकता है। यह जस्ट ट्रांज़िशन का अंतिम या संपूर्ण दृष्टिकोण नहीं है, क्योंकि विभिन्न क्षेत्र, समुदाय, आंदोलन और संगठन अपने स्वयं के दृष्टिकोण विकसित कर रहे हैं (अंतिम खंड देखें)। हालाँकि, आशा है कि ये प्रमुख विचार और प्रश्न सभी पाठकों, उनके आंदोलनों और समदायों के लिए 'जस्ट ट्रांज़िशन का क्या अर्थ हो सकता है' को अधिक गहराई से सोचने के उपकरण देंगे।



## हम यहाँ कैसे पहुंचे?

### जलवाय संकट के ऐतिहासिक और आर्थिक कारण क्या हैं?

वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड - और अन्य "ग्रीनहाउस गैसों" की भारी वृद्धि ग्रह की जीवनदायी और स्व-विनियमन प्रणालियों को असंतुलित कर रही है। वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करने वाली कुछ मानवीय गतिविधियों की तीव्रता, लाजमी नहीं थी, बल्कि यह अपेक्षाकृत हाल ही में हुई है। सन 1700 के मध्य के दशक में औद्योगिक क्रांति के आगमन के साथ कार्बन उत्सर्जन आसमान छू गया। औद्योगिक क्रांति, हम जिस तरह से वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, जिनकी हमें ज़रूरत है या जो खुद को जीवित रखने के आवश्यक है, उस प्रक्रिया में एक परिवर्तन थी। यह हमारे समाज के सवालों "किसका मालिक कौन है?" कौन क्या करता है? किसे क्या मिलता है? वे इसके साथ क्या करते हैं?" के जवाब में एक बड़ा बदलाव को जन्म देता है। औद्योगिक क्रांति युरोप के क्षेत्र में उभरी, जिसे पुंजीवाद के नाम से जाने जाना वाला एक अपेक्षाकृत नवीन सामाजिक और आर्थिक संगठन आकार दे रहा था। हालाँकि औद्योगीकरण और पूंजीवाद समान नहीं हैं, फिर भी आप पुंजीवाद को समझे बिना औद्योगिक क्रांति को नहीं समझ सकते।

पुंजीवाद सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है, जो लोगों के एक-दूसरे के साथ-साथ पारिस्थितिक तंत्र, क्षेत्रों और उनके आसपास के अन्य जीवित प्राणियों के साथ संबंधों को आकार देती है। यह उन प्रणालियों से नाटकीय रूप से भिन्न है जो इसके पहले थीं. 2 और उन प्रणालियों से - जिनमें स्वदेशी समाज भी शामिल हैं - जो विपरीत रूप से या इसके प्रतिरोध में आज अस्तित्व में हैं। बहुत से लोगों ने पूंजीवाद को समझने और उसका वर्णन करने का प्रयास किया है और इसकी जटिलता के कारण इस बात पर असहमति हो सकती है कि इसमें क्या मौलिक है और पूरी तरह से एक नई प्रणाली बनने से पहले क्या बदला जा सकता है। जैसा कि लेखक इसे देखते हैं, पुंजीवाद की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं:

- उत्पादन के साधनों का निजी स्वामित्व: जिन चीज़ों की लोगों को ज़रूरत है या वे चाहते हैं उनका उत्पादन करने के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री या प्राकृतिक उत्पाद व्यक्तिगत स्वामित्व के नियंत्रण में हैं:
- 'वस्तु उत्पादन' का महत्त्व: अधिकांश लोग जो कुछ वे उत्पादित करते हैं उसका अधिकांश उपयोग नहीं करते हैं और जो कुछ वे उपयोग करते हैं और जो कुछ वे उपयोग

करते हैं उसका अधिकांश उत्पादन नहीं करते हैं। इसके बजाय, अधिकांश चीज़ें बेचने के लिए उत्पादित की जाती हैं और लोगों को अधिकांश चीज़ें खरीदनी पड़ती हैं जिनकी उन्हें दिन-प्रतिदिन जीवित रहने के लिए आवश्यकता होती है:

- 3 दिहाड़ी मजदूर: चूँकि अधिकांश लोगों के पास उत्पादन के साधन नहीं हैं, जीवित रहने के लिए आवश्यक चीज़ें खरीदने में सक्षम होने के लिए उन्हें अपना श्रम उन लोगों को बेचना पड़ता है जिनके पास उत्पादन के साधन हैं। अक्सर, जिस काम के लिए लोगों को भुगतान किया जाता है उसे "वास्तविक काम" समझा जाता है जबकि घर, बच्चों, बुजुर्गों, बीमार लोगों और पर्यावरण की देखभाल के काम को अक्सर कम महत्त्व दिया जाता है, अदृश्य बना दिया जाता है और बिना वेतन के किया जाता है। यह आमतौर पर महिलाओं को सौंपा जाता है। यह कार्य, जिसे "पुनरुत्पादक श्रम" कहा जाता है, लोगों को जीवित रहने के लिए किया जाना चाहिए। जब इस काम को अदृश्य और कम महत्त्व दिया जाता है. तो यह नियोक्ताओं के लिए एक प्रकार की "सब्सिडी" के रूप में कार्य करता है:
- 4 (मानवीय जरूरतों को पूरा करने के बजाय) लाभ को अधिकतम करने के लिए निरंतर वृद्धि और उत्पादन: पंजीवादी बाज़ार कंपनियों को, एक-दूसरे के साथ, निरंतर प्रतिस्पर्धा में डालते हैं, ताकि कंपनियों को लगातार अपना मुनाफा बढ़ाने की जरूरत पड़े। इस प्रणाली के तहत, उन्हें विकास करना होगा, या व्यवसाय से बाहर जाना होगा। यह पुंजीवादी समाज को प्राकृतिक प्रणालियों और एक सीमित ग्रह पर जीवन के साथ निरंतर संघर्ष में डालता है:
- 5 'प्राकृतिक संसाधन': जंगल, झीलें, नदियाँ, भूमि, चट्टानें, जानवर, पारिस्थितिकी तंत्र और अन्य प्राकृतिक प्रक्रियाओं और प्रणालियों को उत्पादन प्रक्रियाओं में वस्तुओं या (संभावित) इनपुट के रूप में देखा जाता है। उनके स्वयं के अस्तित्व, उनकी गरिमा और उनकी जीवन-निर्वाह भिमकाओं को लाभ कमाने की उनकी क्षमता के आगे गौण माना जाता है। धरती माता की यह न्यूनीकरणवादी समझ पूंजीवाद के लिए अनोखी नहीं है -कुछ विकल्प उसी जाल में फंस गए हैं - लेकिन यह उसके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है;
- 'बेदखली द्वारा संचय': लाभ को अधिकतम करने के लिए, जो कुछ भी मुफ़्त में लिया जा सकता है वह लिया जायेगा। ऐतिहासिक रूप से साझा या आम भूमि, पारिस्थितिकी तंत्र, सामृहिक और स्वदेशी ज्ञान और पारंपरिक बीज, अन्य चीजों के अलावा, अक्सर राज्य और कानुनी प्रणालियों के समर्थन से, सीधे तौर पर चोरी कर लिए जाते हैं या अत्यधिक दोहन किया जाता है, ताकि कंपनियों को 'सुपर प्रॉफिट' प्राप्त करने की अनुमित मिल सके:

7 विस्तार/साम्राज्यवाद: क्योंकि पुंजीवाद लगातार मुनाफा बढ़ाने की आवश्यकता के इर्द-गिर्द संरचित है, यह हमेशा नए इनपुट और नए बाजारों की तलाश में रहता है। श्वेत-वर्चस्ववादी और पितृसत्तात्मक राज्यों के साथ गठबंधन ने, इसने दुनिया भर में साम्राज्यवादी विस्तार, उपनिवेशवाद, लुट और शोषण की प्रक्रिया को प्रेरित किया है।

इस सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था ने औद्योगीकरण प्रक्रिया के लिए मंच तैयार किया. एक ऐसी प्रक्रिया जिसने पंजीवाद को बढ़ावा दिया और इसे दुनिया भर में फैलाने में मदद की। जैसा कि हम जानते हैं औद्योगीकरण जीवाश्म ईंधन पर निर्भर था (और अभी भी निर्भर है): कोयला, तेल और गैस सहित नए ईंधन का उपयोग, बड़े पैमाने पर मशीनरी को चलाने के लिए किया जाता था जो बड़े पैमाने पर उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करती थी 🕴 इससे उत्पादन में भारी वृद्धि हुई, उन्हें पैदा करने वाले श्रमिकों का शोषण, विशेष रूप से उपनिवेशित दुनिया में प्राकृतिक प्रणालियों और प्रक्रियाओं की लुट कच्चे माल और बेगारी के लिए की गयी। संसाधनों के निष्कर्षण और कचरे के द्वारा प्राकृतिक प्रणालियों पर भारी बोझ डाला गया, इसके बावजद, विनिर्माण का पैमाना बिना रोक-टोक के बढता रहा है।

शुरुआत में यूरोप में और बाद में जहाँ भी पूंजीवाद फैला, औद्योगिक पूंजीवादी उत्पादन में बदलाव के लिए, समाज के पूर्ण पुनर्गठन की आवश्यकता थी। जहाँ सामुदायिक भूमि की 'परिबंदी' ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई: इसे अधिक लाभदायक उपयोगों ('उत्पादक' के रूप में वर्णित) के लिए मुक्त करने के लिए और एक सस्ती श्रम शक्ति बनाने के लिए लोगों को उनकी भूमि से बेदखल कर दिया गया। इस 'बेदखली द्वारा संचय'<sup>4</sup> की इस प्रक्रिया का पुंजीवाद के जन्म के समय से ही दृश्यमान, हिंसक और व्यापक रूप से विरोध किया गया।

परिबंदी को एक ऐसी विचारधारा के साथ जोड़ा और रेखांकित किया गया है जो प्रकृति को निष्क्रिय सामग्री के रूप में समझती है, जिसे नियंत्रित करने की आवश्यकता है या मनष्यों द्वारा उपयोग किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे संसाधनों का एक संग्रह है। इस विचारधारा ने, जिसे कभी-कभी ईसाई धर्मशास्त्र के संदर्भ में उचित ठहराया जाता है, पृथ्वी पर मानव प्रभुत्व के विचार को मजबूत किया है और पृथ्वी के साथ अलग-अलग संबंधों में रहने वाले स्वदेशी और पारंपरिक समुदायों की अधीनता (और कभी-कभी विनाश) को वैध बनाया है। इसने 'निष्कर्षणवाद' के रूप में वर्णित एक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया है - पारिस्थितिक और सामाजिक दुनिया जिसमें वे अंतर्निहित हैं, पर विचार किए बिना प्राकृतिक संसाधनों का लालची और हिंसक उपभोग को बढ़ावा दिया है। दुनिया के कई हिस्सों में ज़मीन, समुद्र और संसाधनों पर खुलेआम कब्ज़ा और उससे जुड़ा निष्कर्षण और विनाश आज भी जारी है। आज नई-नई तरह की चीज़ें (स्वदेशी ज्ञान, विचारों, जीनों, संग्रहीत कार्बन) को निजी संपत्ति में बदला जा रहा है और उनके गहरे सांस्कृतिक और सामाजिक अर्थों से वंचित कर दिया जा रहा है।

का लालची और हिंसक उपभोग को बढ़ावा दिया है। दुनिया के कई हिस्सों में ज़मीन, समुद्र और संसाधनों पर खुलेआम कब्ज़ा और उससे जुड़ा निष्कर्षण और विनाश आज भी जारी है। आज नई-नई तरह की चीज़ें (स्वदेशी ज्ञान, विचारों, जीनों, संग्रहीत कार्बन) को निजी संपत्ति में बदला जा रहा है और उनके गहरे सांस्कृतिक और सामाजिक अर्थों से वंचित कर दिया जा रहा है।

1700 के मध्य के दशक से, कोयला, मिट्टी के तेल और अंततः तेल और गैस के हेरफेर में प्रगति ने मानव उपयोग के लिए विशाल नए ऊर्जा भंडार उपलब्ध कराए। ये हाइड्रो-कार्बन ईंधन ऊर्जा के उच्च घनत्व वाले स्रोत हैं, जिन्हें आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ली जाया जा सकता है और संग्रहीत किया जा सकता है। इन विशेषताओं ने, निजी संपत्ति की नई समझ के साथ, अपेक्षाकृत कम संख्या में लोगों के लिए धन पर कब्ज़ा करने और उसे केंद्रीकृत करने के लिए एकदम सही परिस्थितियाँ पैदा की।

'जीवाश्म पुंजीवाद' ने केवल हमारे समाज द्वारा ऊर्जा के उपयोग और वितरण के तरीके को ही नहीं, बल्कि बिजली के उपयोग और वितरण के तरीके को भी नया आकार दिया है। इन ऐतिहासिक गतिशीलता के आधार पर, यह तर्क दिया गया है कि अब हम कैपिटलोसीन युग में रहते हैं - एक भवैज्ञानिक युग जहाँ पंजी और पंजीवाद का पृथ्वी पर निर्णायक प्रभाव होता है।<sup>5</sup>

#### जलवायु संकट, असमानता और उपनिवेशवाद के बीच क्या संबंध हैं?

जीवाश्म ईंधन की ओर रुख और जैव ऊर्जा स्रोतों (लकड़ी और मानव या पशु ऊर्जा) से दूर जाना एक क्रमिक, असमान और अनुचित प्रक्रिया थी। यह सभी जगहों पर एक साथ नहीं हुआ। औद्योगीकरण की प्रक्रिया सन 1700 के मध्य के दशक में इंग्लैंड में शुरू हुई, फिर 1700 के अंत के दशक और 1800 के प्रारंभ में तेजी से पश्चिमी युरोप के शहरों और उत्तरी अमेरिका के पूर्वी समुद्री तट तक फैल गई। 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी यूरोप और उनके उत्तरी अमेरिकी उपनिवेशों के मालिक वर्गों ने, अपने देशों की सैन्य, धार्मिक और राजनीतिक शक्तियों द्वारा समर्थित, श्रम, उत्पादन, संसाधन निष्कर्षण, धन वितरण के वैश्विक पनर्गठन को लाग करने के लिए अपनी नई कोयले से चलने वाली आर्थिक और सैन्य शक्ति का उपयोग किया।

औद्योगीकृत देशों और क्षेत्रों ने अन्य क्षेत्रों, जिनमें से कई पर उनका उपनिवेश के रूप में नियंत्रण था, को कच्चे माल और लोगों को उपलब्ध कराने और उनके निर्मित माल को खरीदने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार वस्तुओं का वैश्विक प्रवाह उभरने लगा। प्राकृतिक संसाधनों (और गुलाम बनाए गए मनुष्यों) को विशेष रूप से उन देशों से निकाला गया जिन्हें अब वैश्विक दक्षिण कहा जाता है और वैश्विक उत्तर के अमीर लोगों को और अधिक समृद्ध करने के लिए में वहाँ स्थानांतरित कर दिया गया। सस्ते भोजन (कैरिबियन में दास-बागानों से

चीनी, उत्तरी अमेरिका के बसने वाले राज्यों से गेहूं) और कच्चे माल (उत्तरी अमेरिका से लकड़ी; भारत के औपनिवेशिक साम्राज्य से कच्चे कपास) ने वैश्विक उत्तर के शहरी केंद्रों में रहने की लागत नीचे लाने में मदद की। इससे फैक्ट्री मालिकों को अधिकतम मुनाफ़ा सुनिश्चित करते हुए, अपने श्रमिकों को न्युनतम संभव वेतन देने की अनुमति मिली।

लोगों को - विशेष रूप से नस्लीय और स्वदेशी लोगों और महिलाओं को - उस भूमि, क्षेत्र और पारिस्थितिकी तंत्र से बेदखल करने की वैश्विक प्रक्रिया, जिसके साथ उन्होंने पहले खुद को जीवित रखा था, ने कच्चे माल को सस्ते में निकालने के लिए मजदूरों की एक स्थिर आपर्ति की गारंटी दी, साथ ही ऐसे उपभोक्ता भी बनाए जिन्हें अपने अस्तित्व के लिए बाज़ारों पर निर्भर करना करना पड़ा। पितुसत्तात्मक और श्वेत वर्चस्ववादी विचारधाराओं ने, बाज़ार के तथाकथित अदृश्य हाथ और निजी संपत्ति की प्रधानता के विचारों के साथ मिलकर, इस लूट के लिए एक वैचारिक औचित्य प्रदान किया। आज विश्व स्तर पर धन और शक्ति का वितरण इसी ऐतिहासिक अन्याय और हिंसा का परिणाम है।

हालाँकि, औद्योगिक पूंजीवाद द्वारा उत्पन्न असमानताएँ केवल वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण के बीच नहीं हैं। वे पृथ्वी पर हर राष्ट्र के भीतर मौजूद हैं। किसी भी देश के भीतर, शहरी केंद्र अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों से संसाधन निकालकर (और कचरा डंप करके) समृद्ध हो जाते हैं, और शहरों और ग्रामीण इलाकों दोनों में, जिन श्रमिकों पर यह प्रणाली निर्भर करता है उन्हें उनके श्रम द्वारा उत्पादित मुनाफे का एक छोटा सा हिस्सा मिलता है। जिनके पास वित्तीय, यांत्रिक, प्राकृतिक और अन्य प्रकार के संसाधन हैं, वे कहीं अधिक बड़ा हिस्सा लेने में सक्षम हैं। श्रमिक अक्सर खतरनाक वातावरण में काम करते हैं जहाँ उनके स्वास्थ्य और कल्याण की रक्षा के उपायों की कमी होती है। 2013 की राणा प्लाजा आपदा से लेकर कोविड-19 के व्यापक प्रभाव तक, बुचड्खानों, गोदामों, औद्योगिक फार्मों, किराने की दकानों और देखभाल घरों में अनिश्चित और कम वेतन वाले श्रमिकों पर अक्सर जोखिम और लागत को स्थानांतरित करके मनाफे को अधिकतम किया जाता है।

इस प्रणाली ने नस्ल, लिंग और जातीयता सिहत कई अन्य आधारों पर भी विभाजन को गहरा किया है, उसे जन्म दिया है, या उसका शोषण किया है। लोग किस हद तक औद्योगिक उत्पादन की प्रणाली से लाभ उठाने में सक्षम हैं, या इसकी लागत वहन करने की अपेक्षा की जाती है, यह समाज में उनकी स्थिति और विभिन्न प्रकार की शक्ति पर निर्भर करता है, जिसका वे प्रयोग करने में सक्षम हैं। व्यक्तिगत घर से लेकर परे विश्व में अंतर और विविधता का शोषण करने और असमानता को तीव्र करने की प्रक्रिया हर पैमाने पर हो सकती है।

उत्पादन और निष्कर्षण की पर्यावरणीय लागत, जिसमें विषाक्त उत्सर्जन, पर्यावरण विनाश, साथ ही जल और वाय प्रदुषण शामिल हैं, उन स्थानों पर केंद्रित हैं जहाँ हाशिए पर रहने वाले

लोग रहते हैं और काम करते हैं। इनमें विशेष रूप से नस्लीय लोग और स्वदेशी राष्ट्र शामिल हैं, जिन्हें ऐतिहासिक रूप से पर्यावरणीय नस्लवाद का विरोध करने के लिए कम अधिकार और कम सामाजिक शक्ति प्रदान की गई है।

औद्योगिक पंजीवाद की व्यवस्था भी अक्सर अवैतनिक और गैर-मान्यता प्राप्त कार्यों के एक विशाल समूह पर निर्भर करती है जिसे हम 'पुनरुत्पादक श्रम' कह सकते हैं। इसमें बच्चे और बुजुर्गों की देखभाल, भोजन उत्पादन और तैयारी, चिकित्सा देखभाल, भावनात्मक श्रम और पर्यावरण संरक्षण शामिल हैं। श्रमिक भी इंसान हैं, जिनका जीवन भर पोषण और देखभाल की जानी चाहिए। इस कार्य के बिना, पंजीवाद कार्य नहीं कर सकता। <sup>6</sup> साथ ही इसके महत्त्व को आमतौर पर स्वीकार या पुरस्कृत नहीं किया जाता है। आधुनिक विश्व व्यवस्था के पितुसत्तात्मक समाजों में, यह कार्य आमतौर पर महिलाओं और/या लिंग के 'अनुरूप' नहीं होने वाले लोगों को सौंपा जाता है। समाज, रीति-रिवाज और कानून सख़्त लिंग सीमाओं और पदानुक्रमों को लागू करते हैं। प्रभावी ढंग से, महिलाओं के शरीर को यह सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त कर सकते हैं कि इस अपरिहार्य कार्य को न्यूनतम मुआवजा मिलता रहे और आदर्श रूप से, किसी का ध्यान न जाए।

महिलाओं और अन्य हाशिये पर पड़े लोगों के अति-शोषण पर भरोसा करने के अलावा, आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था प्राकृतिक प्रणालियों और प्रक्रियाओं तक आसान और सस्ती पहुंच पर निर्भर करती है। कभी-कभी इन तथाकथित संसाधनों तक मुफ्त में पहुंच बनाई जाती है, जैसे कि जब निर्माताओं को बिना भुगतान के भुजल निकलने या कचरा डंप करने की अनुमति दी जाती है। अन्य समय में, निवेशक इन प्रणालियों और प्रक्रियाओं को वस्तुओं के रूप में मानते हैं, उनके लिए नाममात्र कीमत का भुगतान करते हैं (उदाहरण के लिए कृषि ईंधन का उत्पादन करने के लिए भिम के विशाल हिस्से को खरीदकर) लेकिन मानव और गैर-मानव जीवन प्रक्रियाओं को बनाए रखने में उनकी विविध भूमिकाओं को नजरअंदाज कर देते हैं। निवेशक उन प्रणालियों को नष्ट करके 'सुपर प्रॉफ़िट' प्राप्त करने में सक्षम हैं जिन पर मनुष्य और अन्य प्राणी जीवित रहने के लिए निर्भर हैं और लोगों का शोषण कर रहे हैं जो ऐसी प्रणालियों पर निर्भर हैं।

साथ ही, लाभ को अधिकतम करने के उद्देश्य से ये सामाजिक और आर्थिक प्रणालियाँ अधिकांश लोगों और ग्रह की जरूरतों को पुरा करने में विफल रहती हैं। औद्योगिक खाद्य प्रणाली सस्ते या सब्सिडी वाले कच्चे माल पर निर्भर करती है, जिसे भारी मात्रा में संसाधित किया जाता है और लंबी दूरी तक ले जाया जाता है, जिससे कम्पनियाँ मुनाफ़ा कमाते हैं और इसके प्रत्येक चरण में मानव श्रम का शोषण करते हैं। इससे मानवता और हमारे ग्रह की जीवनदायी प्रणालियों दोनों को भारी कीमत चुकानी पड़ी है। उपभोग किए जाने वाले खाद्य पदार्थों की सीमित विविधता स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे रही है, जिसका गरीब उपभोक्ताओं पर विशेष प्रभाव पड़ता है, क्योंकि ताजा, स्वस्थ, स्थानीय रूप से उत्पादित भोजन एक लक्जरी उत्पाद बन गया है।



चित्र का श्रेय : नादिर बोहम्रौच

एफ. ए. ओ. के अनुसार, स्वस्थ आहार 3 अरब लोगों की पहुंच से बाहर है। साथ ही, उत्तर और दक्षिण दोनों में किसान और खाद्य उत्पादक भूखे रह रहे हैं, अपनी ज़मीन खो रहे हैं और 'निराशा की मौत' झेल रहे हैं। यह स्वदेशी और किसान खाद्य प्रणालियों के बिल्कुल विपरीत है जो खाद्य संप्रभुता को बढ़ावा देते हैं और प्राकृतिक प्रणालियों और क्षेत्रों के साथ सद्भाव में समुदायों के पोषण का लक्ष्य रखते हैं। पूंजीवादी मुल्यांकन के संकीर्ण चश्मे से, किसान खाद्य प्रणालियों को अक्सर पिछड़ा, छोटा और अकुशल के रूप में चित्रित किया जाता है क्योंकि वे लाभ के उत्पादन को प्राथमिकता नहीं देते हैं। मनुष्य और समस्त स्थलीय जीवन के दृष्टिकोण से, वे किसान खाद्य उत्पादक जीवनदायी भविष्य की संभावना का पेशकश करते हैं।

हमारी ऊर्जा प्रणाली में, अतिउत्पादन और बर्बादी, कुछ लोगों के लिए पहले से कहीं अधिक ऊर्जा (सीधे, या निर्मित उत्पादों के रूप में) उपभोग करना संभव बनाती है। फिर भी, अमीर देशों में भी, लाखों लोग अपने घरों को सुरक्षित और पर्याप्त रूप से गर्म करने, या सभ्य जीवन जीने के लिए आवश्यक ऊर्जा तक पहंचने के लिए संघर्ष करते हैं। चाहे वह विज्ञापन से हो और अप्रचलन में निर्मित

हो, या नए वैश्विक बाजारों के खुलने और वैश्विक उत्तर में विलासिता की खरीदारी के लिए, उपभोक्ता ऋण की आसान उपलब्धता से हो, वर्तमान विश्व प्रणाली अच्छी तरह से उत्पादन करने और हर किसी की मौजुदा जरूरतों को पुरा करने और संतुष्ट करने के बजाय उपभोग बढाने और नई ज़रूरतें पैदा करने के लिए तैयार है।

पंजीवाद के तर्क के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में हम बिना किसी भविष्य के विकास पथ पर चल रहे हैं। प्रत्येक वर्ष हम ग्रह के पारिस्थितिक तंत्र की क्षमता से अधिक का दोहन कर रहे हैं और जितना सहन कर सकते हैं, उससे अधिक कचरा डाल रहे हैं। दुनिया की सरकारें और कंपनियां, जैसा कि COP 26 में बताया गया था, व्यवसाय की रक्षा के लिए हमेशा की तरह ग्रह की सीमाओं का उल्लंघन जारी रखने की योजना बना रहे हैं। वे भविष्य में वायमंडल से कार्बन को हटाने के लिए अप्रमाणित प्रौद्योगिकियों पर मानवता की आशाएँ टिकाते हैं। प्रतिदिन सामने आने वाली नई जलवायु आपदाओं के कारण पंजीवाद के प्रभावों को नज़रअंदाज करना कठिन होता जा रहा है। इस सारे निष्कर्षण का लाभ कुछ ही लोगों को मिलता है, जबकि लागत कई लोगों को वहन करनी पड़ती है। जस्ट ट्रांज़िशन का अर्थ इस गतिशीलता को उलट देना है।



## आज हम कहाँ खड़े हैं?

20वीं सदी के उत्तरार्ध के दौरान ये अधिक तीव्र हो गई। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, धन और व्यापार की अंतर्राष्ट्रीय चर्चाओं को मुख्य रूप से नवउदारवादी विचारधारा द्वारा आकार दिया गया, जिसका तर्क है कि बाजार राज्य के हस्तक्षेप के बिना बेहतर कार्य करते हैं। नवउदारवाद, राज्य को मुख्य रूप से निजी संपत्ति के अधिकारों के रक्षक के रूप में देखता है और तर्क देता है कि सरकारों को सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक नियमों को हटा देना चाहिए, जिनके बारे में कहा जाता है कि, वे आर्थिक विकास को धीमा करते हैं और बाजार में बाधा डालते हैं।

समय-समय पर प्राकृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संकटों ने कई लोगों को व्यवस्था में मुलभृत असमानताओं के बारे में जागरूक किया है और परिवर्तन के लिए व्यापक आह्वान उत्पन्न किया है। कोविड-19 संकट नवीनतम ऐसी उथल-पुथल है, जैसा कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन ने कहा है, 'बेहतर तरीके से निर्माण करें', एक अवसर का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती है। हालाँकि, पिछले संकटों ने पंजीवादी विश्व व्यवस्था के लचीलेपन को दिखाया है। कम्पनियाँ और धनी लोग इन संकटों से बचने या यहां तक कि लाभ कमाने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में हैं। उदाहरण के लिए, महामारी के दौरान, वैश्विक असमानता तेजी से बढ़ी, अरबपितयों के हाथों में संपत्ति एक ही वर्ष में लगभग 8 ट्रिलियन डॉलर से बढ़कर 13 ट्रिलियन डॉलर हो गई, इस अभृतपूर्व संपत्ति केवल 2,775 लोगों के बीच वितरित है।

सरकारी प्रतिक्रियाएं अक्सर इस प्रवृत्ति को मजबूत करती हैं, जैसा कि 2008 के खाद्य और आर्थिक संकट में देखा गया जब बड़े पैमाने पर सार्वजनिक बेल-आउट ने निजी कम्पनियों की एक छोटी संख्या को समृद्ध किया। कोविड-19 महामारी के शुरुआती महीनों में राज्य की भूमिका के बारे में सामाजिक बातचीत शुरू हुई और कुछ देशों में नागरिकों की बुनियादी जरूरतों को पुरा करने के लिए अभृतपूर्व स्तर का राज्य निवेश भी शुरू हुआ। हालाँकि, कुछ नीतियों ने असमानता के मूल कारणों से निपटने का प्रयास किया है, जिसने इतने सारे लोगों को कोविड - 19 के प्रति संवेदनशील बना दिया है। बल्कि बड़े पैमाने पर, कॉर्पोरेट मुनाफे को बढ़ावा देने और यथास्थिति की निरंतरता सुनिश्चित करने की कोशिश की है, जिसमें अरबपतियों ने सफलतापूर्वक भारी मात्रा में सब्सिडी हासिल कर ली है। यहां तक कि अपेक्षाकृत प्रस्ताव - जैसे कि गरीब देशों को किफायती मुल्य पर जीवन रक्षक टीकों का

निर्माण करने की अनुमित देने के लिए, कुछ प्रकार के पेटेंट प्रवर्तन को अस्थायी रूप से निलंबित करना - इसे अमीर देशों और कॉर्पोरेट जगत ने लगातार अवरुद्ध किया गया है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रक्रियाओं - विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन - में महत्वाकांक्षा की वही कमी दिखाई दी है, जिसमें बाध्यकारी लक्ष्यों की जगह कार्बन ट्रेडिंग, 'प्रकृति आधारित समाधान' और 'नेट ज़ीरो' प्रतिज्ञा जैसे कॉर्पोरेट-अनुकुल उपकरणों ने ले ली है, जो वास्तव में संकट का समाधान किये बिना लाभ कमाने के नए अवसर पेश करते हैं।

#### आज जीवाश्म ईंधन का उपयोग कैसे किया जाता है?

स्पष्ट और अकाट्य साक्ष्य के बावजूद जीवाश्म ईंधन का निरंतर उपयोग तेजी से जलवायु को बदल रहा है और पथ्वी के जीवन को बनाए रखने वाले पारिस्थितिक तंत्र को नष्ट कर रहा है, हम मानव इतिहास में किसी भी समय की तुलना में आज अधिक खनन और जीवाश्म ईंधन का उपयोग कर रहे हैं। 1990 के बाद से सभी मानव-जनित उत्सर्जन का आधा हिस्सा वायुमंडल में डाला गया है और नवीकरणीय प्रौद्योगिकियों की शुरूआत के बावजूद उत्सर्जन हर साल बढ़ रहा है। आज सभी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग तीन-चौथाई, ऊर्जा उत्पादन से आता है, मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन से।

इस सारी ऊर्जा का उपयोग किस लिए किया जा रहा है? अधिकांश ऊर्जा का उपयोग बिजली, ताप उत्पादन, संसाधन निष्कर्षण (जैसे खनन), औद्योगिक उत्पादन और परिवहन के लिए किया जाता है। 20वीं सदी में ऊर्जा के उपयोग की वृद्धि को सामग्री की खपत में बढत (विशेष रूप से वैश्विक उत्तर में) और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में संबंधित वृद्धि से जोड़ा गया है। कई लोगों के पास बहत अधिक सामान होता है, जिसे उन तक पहंचने के लिए बहत दूर तक यात्रा करनी पड़ती है। कच्चा माल, तैयार उत्पाद और अपशिष्ट दुनिया भर में फैले हए हैं।

हम भोजन का उत्पादन करने, लोगों और सामानों को ग्रह के चारों ओर (लंबी और छोटी दूरी दोनों) ले जाने के लिए, अपने घर बनाने और अपनी देखभाल करने के लिए जीवाश्म ईंधन पर निर्भर हैं। 20वीं और 21वीं सदी के दौरान किसान खाद्य से लेकर सहकारी समितियों और स्थानीय लघु उद्योगों तक की वैकल्पिक प्रणालियों को कमजोर और नष्ट कर दिया गया है। जीवाश्म ईंधन के बिना घरों या स्थानीय व्यवसायों को बिजली देने के लिए स्थानीय रूप से आधारित नवीकरणीय ऊर्जा, बेहद छोटे पैमाने पर बनी हुई है। कई स्थानों पर सार्वजनिक और लोकतांत्रिक रूप से नियंत्रित ऊर्जा प्रणालियाँ, जो मानव और पर्यावरणीय आवश्यकताओं के आसपास, ऊर्जा उत्पादन को फिर से केंद्रित करने में मदद कर सकती हैं.

निजीकरण का विरोध करने और उसे वापस लेने के व्यापक प्रयासों के बावजुद, खतरे में हैं। 2021 में वैश्विक बिजली उत्पादन का 10% हिस्सा पवन और सौर प्रौद्योगिकियों से आया, यह जहाजों, हवाई जहाज और कारों जैसी चीजों के कारण कुल ऊर्जा उपयोग का एक छोटा प्रतिशत दर्शाता है। इसके अलावा, बहुत सी नई नवीकरणीय उत्पादन क्षमता लोकतांत्रिक रूप से नियंत्रित, पनर्योजी या सामाजिक रूप से उचित नहीं है।

जीवाश्म ईंधन ने धन को कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित करने, श्रमिकों को नियंत्रित करने और दुनिया भर में माल भेजने में मदद की है ताकि वस्तुओं का उत्पादन वहाँ किया जा सके जहाँ श्रम सबसे सस्ता है - यानी, ऐसी जगह जहाँ श्रमिकों के पास सभ्य व्यवहार, सम्मान और अधिकारों की माँग करने की सबसे कम शक्ति है। 8 क्षेत्रों, उपकरणों और सभ्य जीवन जीने के साधनों पर नियंत्रण के संघर्ष से, ऊर्जा प्रणाली के बदलाव का गहरा संबंध है।

#### विभिन्न ईंधन स्रोतों का क्या प्रभाव है?

आज भी विश्व की 80% से अधिक ऊर्जा जीवाश्म ईंधन से आती है। जबिक 2020 की महामारी के दौरान तेल और कोयले की माँग में गिरावट आई. उसके बाद से इसमें तेजी से सुधार हुआ है। कृषि ईंधन (मकई, तिलहन और गन्ना जैसी फसलों से प्राप्त ईंधन), परमाणु ऊर्जा, जल विद्यत और अन्य तथाकथित नवीकरणीय स्रोतों की हिस्सेदारी, हमारी ऊर्जा जरूरतों के 20 प्रतिशत से भी कम हैं। जबकि ये स्रोत तेजी से बढ़ रहे हैं, कोयले और तेल की मात्रा में साल दर साल वृद्धि जारी है, 'नवीकरणीय' स्नोतों में वृद्धि, विश्व स्तर पर ऊर्जा उपयोग की वृद्धि के साथ तालमेल रखने में विफल रही है।

जीवाश्म ईंधन को कथित तौर पर नवीकरणीय ऊर्जा, प्रौद्योगिकियों से बदलने से, हम अपने आप वहाँ नहीं पहंच सकते जहाँ पहंचना चाहते हैं। नवीकरणीय ऊर्जा, कार्बन चक्र के लिए संभावित रूप से स्वस्थ होती हैं, लेकिन इनमें से कई प्रौद्योगिकियां पारिस्थितिक तंत्र और समुदायों के लिए भारी लागतदायी साबित होती हैं, उदाहरण के लिए दुर्लभ-पृथ्वी खनिज और लिथियम, निष्कर्षण के अन्य रूपों पर निर्भर करती हैं। किष ईंधन उत्पादन महत्त्वपर्ण उत्सर्जन, कुछ मामलों में गैसोलीन से भी अधिक, का कारण बन सकता है। जहाँ जंगलों, प्राकृतिक श्रेणी-भूमि, या अन्य प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों को कृषि ईंधन का उत्पादन करने के लिए औद्योगिक कृषि उत्पादन में परिवर्तित किया जाता है, वहाँ प्रभाव विशेष रूप से चरम पर दिख सकते हैं। 2012 में, दुनिया के सबसे बड़े उत्पादक, अमेरिका ने लगभग 28 मिलियन एकड़ कृषि भूमि को, कृषि ईंधन उत्पादन के लिए प्रतिबद्ध किया और इस उत्पादन के पैमाने. केवल बढ़ने की संभावना है।

जीवाश्म ईंधन का हानिकारक प्रभाव संदेह से परे है। हालाँकि, आज हम ऊर्जा के जिस भी स्रोत के बारे में जानते हैं वह सामाजिक और पर्यावरणीय नकसान के साथ आता है। केवल एक विशेष रूप से हानिकारक प्रकार के ईंधन को, अन्य कम हानिकारक प्रकार के ईंधन से

बदलने पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, हमें पृछना चाहिए: ऊर्जा की आवश्यकता किस लिए है और किसके लिए? ऐसा करने के लिए, पहले यह समझना ज़रूरी है कि आज की स्थिति से किसे लाभ होता है।

#### जीवाश्म ईंधन के लगातार प्रयोग से सबसे ज़्यादा फायदा किसे हो रहा है?

आज संयुक्त राज्य अमेरिका, युरोपीय संघ और चीन ग्रीनहाउस गैसों के सबसे बड़े उत्सर्जक हैं और सामृहिक रूप से वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का कुल 41.5% योगदान करते हैं। $^{10}$ G8 देशों को 86% 'अतिरिक्त' उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार माना जाता है। वैश्विक दक्षिण के अधिकांश देशों में उत्सर्जन बहुत कम है। दुनिया के अमीर देश उन ग्रीनहाउस गैसों के लिए भी ज़िम्मेदार हैं जो उनके द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए अन्यत्र उत्सर्जित होती हैं। वैश्विक स्तर पर, सस्ते कृषि उत्पादों से लेकर निर्मित इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य उपभोग्य सामग्रियों तक, गरीब देशों से लेकर, अमीर देशों तक, सामानों का भारी प्रवाह होता है। उत्सर्जन की गणना आमतौर पर उस देश में की जाती है जहाँ वे होते हैं. जबिक अन्य देशों के उपभोक्ताओं को उनसे लाभ होता है, जिसका अर्थ है कि अंतरराष्ट्रीय उत्सर्जन के आंकडे आमतौर पर अमीर देशों द्वारा जलवाय परिवर्तन में किए गए योगदान को कम आंकते हैं।

साथ ही, किसी देश के सभी लोगों को जीवाश्म-ईंधन संचालित अर्थव्यवस्था से समान रूप से लाभ नहीं होता है। जैसा कि ऊपर तर्क दिया गया है, जीवाश्म ईंधन और उनके चारों ओर निर्मित साम्राज्यवादी पूंजीवादी व्यवस्था ने, धन के विशाल नए संकेंद्रण की अनुमति दी है। इस मॉडल से विशिष्ट कंपनियों और शेयरधारकों को लाभ हआ है। 1990 के बाद से चार सबसे बड़ी जीवाश्म ईंधन कंपनियों (बीपी, शेल, शेवरॉन और एक्सॉन) ने लगभग 2 टिलियन डॉलर का मनाफा कमाया है। इन कम्पनियों द्वारा नए तेल और गैस अन्वेषण में निवेश जारी हैं, जबकि अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी इस तरह के अन्वेषण को समाप्त करने का निवेदन / आवाहन करती रही है। जीवाश्म ईंधन के विकास को रोकने के बजाय, इन कंपनियों की ओर से चल रही जनमत तैयार करने की प्रक्रिया के कारण, अंतरराष्ट्रीय जलवायु नीति इस उम्मीद पर निर्भर हो रही है कि हम भविष्य में किसी तरह वायुमंडल से इन उत्सर्जन को फिर से अवशोषित करने में सक्षम होंगे11। साथ ही, अन्य औद्योगिक कृषि प्रौद्योगिकियों के निर्माताओं से लेकर, सैन्य आपूर्तिकर्ताओं और सीमा सुरक्षा फर्मों तक की कंपनियाँ, परिवर्तन को रोक रही हैं और जलवायु संकट से लाभ उठाने की तैयारी कर रही हैं। जिन समुदायों से संसाधन निकाले जाते हैं और उनका कचरा डंप कर दिया जाता है, उन्हें शेयरधारकों और परिसंपत्ति-प्रबंधन कंपनियों को होने वाले भारी मुनाफे का लाभ इन कंपनियों में काम करने वाले कामगार को नहीं मिलता है।

आज. अमीर देश और वहाँ रहने वाले अमीर लोग. जीवाश्म ईंधन के उपयोग से असंगत रूप से लाभान्वित होते हैं। उनकी शक्ति और विशेषाधिकार का अर्थ यह भी है कि उनके द्वारा

जलवायु निष्क्रियता की पूरी लागत का भुगतान करने की संभावना कम है। जलवायु संकट के बारे में बढ़ती जागरूकता और वास्तविक, परिवर्तनकारी कार्रवाई की बढ़ती माँग के बावजुद, जो लोग यथास्थिति से सबसे अधिक लाभान्वित होते हैं, वे अभी भी इसकी रक्षा के लिए अपनी काफी शक्ति का उपयोग कर रहे हैं।

#### विश्व प्रणालियाँ कैसे अस्थिर हो रही हैं?

इक्कीसवीं सदी की शुरुआत से, ये दीर्घकालिक रुझान संकट के बिंदु पर पहुंच गए हैं। शीत युद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के पतन के बाद, वैश्विक राजनीति पर संयुक्त राज्य अमेरिका और उससे जुड़ी 'नवउदारवाद' की विचारधारा का प्रभुत्व रहा है। नवउदारवाद मुक्त बाज़ार का पक्षधर है और जैसे ही यह विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू. टी. ओ.) जैसे संस्थानों पर हावी हुआ, उन्होंने देशों को कम्पनियों पर विनियमन वापस लेने के लिए प्रोत्साहित किया (या मजबूर किया) या शुरुआत से ही इसे लागु न करने दिया), मौजुदा सामाजिक कार्यक्रमों को ख़त्म करना (या पहले ही ऐसे कार्यक्रमों को विकसित करना छोड़ देना) - यह सब इस गलत धारणा पर आधारित है कि कम्पनियों को दिए जाने वाले लाभ, आम लोगों तक पहंच बनाने में सक्षम होंगे।

यह स्थिति क्षण भर के लिए स्थिर दिखाई दी और टिप्पणीकारों द्वारा 'इतिहास के अंत' की घोषणा कर दी गयी। इन टिप्पणीकारों ने यह सुझाव दिया कि दुनिया के समाजों और अर्थव्यवस्थाओं को कैसे व्यवस्थित किया जाना चाहिए, इस बारे में मौलिक बहस के लिए अब कोई जगह नहीं है। मार्गरेट थैचर के प्रसिद्ध शब्दों में 'पुंजीवाद का कोई विकल्प नहीं है'। हालाँकि, पिछले तीस वर्षों में चार प्रमुख प्रकार की अस्थिरताएँ सामने आई हैं, या गहरी हुई हैं। इनसे वैश्विक स्तर पर नाट -कीय बदलाव की संभावना तो बनती है, लेकिन यह बदलाव बेहतर के लिए होगा या बदतर के लिए, यह एक खुला प्रश्न बना हआ है।

#### राज्यों के बीच शक्ति संबंध परिवर्तनशील हैं

1990 के दशक से वैश्विक व्यवस्था में संयुक्त राज्य अमेरिका की सर्वोच्च स्थिति पर गंभीरता से सवाल उठाया गया है। अन्य विश्व शक्तियाँ उभरी हैं और शक्ति संतुलन पर फिर से बातचीत हो रही है। चीन का सहभाग विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण रहा है और कई लोग 2013 में घोषित इसकी 'बेल्ट एंड रोड पहल' - एक बड़े पैमाने पर वैश्विक बुनियादी ढांचे और विकास परियोजना - को वैश्विक स्तर पर ढांचागत, आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति और प्रभाव बनाने की परियोजना के रूप में देखते हैं।

तथाकथित 'ब्रिक्स' देशों - ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका - ने भी शक्ति हासिल कर ली है और यह समृह आपसी व्यापारिक संबंधों, मजबृत अर्थव्यवस्थाओं और

तथाकथित 'ब्रिक्स' देशों - ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका - ने भी शक्ति हासिल कर ली है और यह समूह आपसी व्यापारिक संबंधों, मजबूत अर्थव्यवस्थाओं और दिनया के लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या के साथ एक महत्त्वपूर्ण ब्लॉक के रूप में उभरा है। कई पर्यवेक्षकों का मानना है कि एक नई बह-ध्रुवीय विश्व प्रणाली विकसित हो रही है, जिसमें आर्थिक और राजनीतिक शक्ति कई देशों के बीच साझा की जाएगी। इससे सत्ता का तीव्र और कभी-कभी अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। 2022 में रूस द्वारा युक्रेन पर आक्रमण इस अस्थिरता का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है और वैश्विक शक्ति के एक नए वितरण की दिशा में एक संभावित मील का पत्थर है।

### कम्पनियों और राज्य के बीच शक्ति संतुलन प्रवाह में है

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से, कम्पनियों की शक्ति में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है। 20वीं सदी के दौरान, विशेष रूप से उत्तरी अमेरिका और पश्चिमी युरोप में, श्रमिक आंदोलनों की लामबंदी के परिणामस्वरूप श्रम और पूंजी के बीच एक प्रकार का समझौता हुआ। कई राज्यों ने कम्पनियों को नियंत्रित करने, नागरिकों और श्रमिकों की सुरक्षा करने और आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं (पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि और भोजन) तक बुनियादी स्तर की पहुंच की गारंटी देने के लिए अपेक्षाकृत मजबूत कानून और नियम बनाए हैं।

नवउदारवाद का उदय जो आंशिक रूप से 1970 के दशक के तेल संकट और 1991 में सोवियत संघ के पतन से प्रेरित है - कम्पनियों को नियंत्रित करने वाले नियमों को खत्म कर दिया और धीरे-धीरे उन श्रमिकों से शक्ति छीन ली गई जो अधिकार हासिल करने में कामयाब रहे थे। वैश्विक दक्षिण के देशों में, राज्य उपयोगिताओं और सार्वजनिक सेवाओं के निजीकरण के साथ-साथ, विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों के माध्यम से परिवर्तन को मजबूर किया गया था। सत्ता में इस बदलाव ने लोगों के अधिकारों की रक्षा करने और कई देशों में कॉर्पोरेट शक्ति, जहाँ वे अभी तक स्थापित नहीं हुए थे, उनको सीमित करने के लिए नीतियों के विकास में बाधा उत्पन्न की। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश समझौतों के एक समूह ने कम्पनियों को बड़े और अधिक शक्तिशाली बनने की अनुमति दी, मुनाफे की रक्षा की और राज्यों को अपनी शक्तियों को सीमित करने के लिए मजबर किया। अधिकांश व्यापार समझौतों में 'निवेशक राज्य विवाद निपटान' तंत्र के साथ निवेश संरक्षण खंड शामिल होते हैं, जो कम्पनियों को सार्वजनिक हित में नए पर्यावरण या अन्य नियमों के कारण उनके मुनाफे पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने पर, मुआवजे के लिए राज्यों पर मकदमा करने की अनमति देते हैं।

कम्पनियों की बढ़ी हुई शक्ति ने अंतरराष्ट्रीय निगमों को तब तक बढ़ने की अनुमति दी है जब तक कि मध्यम आकार के देशों की अर्थव्यवस्था उनके वार्षिक राजस्व से कम नहीं हो जाता।

ये कंपनियाँ आमतौर पर बहुत कम या कोई कर नहीं देती हैं, जिससे कम वित्त पोषित राज्यों की शक्ति कम हो जाती है और उन्हें बुनियादी सेवाएं प्रदान करने के लिए संघर्ष करना पड़ता हैं। इससे दुनिया भर में सामाजिक अशांति फैल गई है क्योंकि सामाजिक आंदोलन कॉर्पोरेट शक्ति का विरोध करते हैं। इस बीच वित्तीय क्षेत्र के बड़े पैमाने पर विनियमन ने 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट का कारण बनने में मदद की। प्रतिक्रिया में लगाए गए कॉर्पोरेट बेल-आउट और मितव्ययिता उपाय उन कई देशों में जो किसी प्रकार की व्यापक सामाजिक सुरक्षा स्थापित करने में कामयाब रहे थे उनके कल्याणकारी राज्य के ताबृत का अंतिम कील साबित हुए। दूसरी ओर, कोविड-19 महामारी ने दुनिया भर में चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों पर प्रहार किया जो पहले से ही मितव्ययिता और निजीकरण के कारण नष्ट हो चुकी थीं। उन निर्णयों की लागत बिल्कुल स्पष्ट हो गई है। महामारी की आपातकालीन प्रतिक्रियाओं में कुछ देशों में सार्वजनिक व्यय की लहर देखी गई है जो महीनों पहले लगभग अकल्पनीय रही होगी। हालाँकि, इस खर्च का अधिकांश भाग युद्धकालीन अर्थव्यवस्थाओं के अनुरूप तैयार किया गया है और कई आपातकालीन राहत प्रयासों ने धन को सीधे कम्पनियों की जेब में प्रवाहित करने की अनुमित दी है, जैसा कि वैक्सीन उत्पादन और परिणामी असमान वितरण से स्पष्ट है। इन निर्णयों ने 2008 के बेलआउट की विनाशकारी गलतियों को दोहराया, जिसमें हाल के इतिहास में गरीबों से अमीरों को धन का सबसे बड़ा हस्तांतरण देखा गया। ऊर्जा संकट जो 2021 में शुरू हुआ और यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के आर्थिक प्रभावों से और भी बढ गया, जिससे समाज के सबसे गरीब लोगों को निगमों के मनाफे पर सब्सिडी देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

जलवायु संकट से निपटने के लिए बड़े पैमाने पर समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता होगी और राज्यों को यहां महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ सकती है। लेकिन उन्हें यह भूमिका निभाने के लिए हमें दशकों के नवउदारवाद को उलटना और वापस लाना होगा। दनिया भर में लोग ऐसा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

## अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाज़ार तेजी से अस्थिर हो रहे हैं

2008 के वैश्विक वित्तीय संकट ने यह दर्शाया की कि राज्यों की तुलना में कम्पनियों ने अधिक शक्ति हासिल की और उन्हें बेहद लाभ भी हुआ है। साथ ही, इसने वित्तीय अस्थिरता के युग की शुरुआत की जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था अभी भी उभर नहीं पाई है। संकट के बाद से कमोडिटी की कीमतें, दोनों, ऊंची और अस्थिर बनी हुई हैं और वित्तीय बाजारों के बारे में संदेह ने बड़े पैमाने पर, निगमों द्वारा भूमि (कृषि भूमि और आवास दोनों सिहत), पानी और खनिजों जैसी संपत्तियों जिन्हे अपेक्षाकृत स्थिर निवेश के रूप में देखा जा रहा है, निवेश करने की होड़ मची है। 2008 के बाद से एक नई वैश्विक मंदी का खतरा मंडरा रहा है, जो 2022 में तेजी से मुद्रास्फीति और बाजार अस्थिरता के साथ और भी अधिक बढ़

रहा है। निरंतर, शांतिपूर्ण, वैश्विक विकास की दृष्टि जिसने 1992 में राजनीतिक वैज्ञानिक फ्रांसिस फुकुयामा को 'इतिहास के अंत की घोषणा' करने के लिए प्रेरित किया वह सारी विश्वसनीयता खो दी है।

कोविड-19 महामारी से जुड़ी विनाशकारी स्टॉक-बाज़ार दुर्घटनाएँ इस अस्थिरता को और स्पष्ट करती हैं। क्रिप्टोकरेंसी और अपरणीय टोकन (एन. एफ. टी.) जैसी नई काल्पनिक वस्तुओं की आसमान छूती लोकप्रियता, 2021 और 2022 में कई देशों में देखी गई मुद्रास्फीति की उन्मादी दरें, तेल की कीमतों और वैश्विक शेयर बाजारों में बेतहाशा उतार-चढ़ाव की लगातार बढ़ती 'वित्तीयकरण' प्रक्रिया सभी एक गहरी अस्थिर प्रणाली की तरफ इशारा करते हैं। यह देखते हुए कि अधिकांश लोग जो अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए बाजार पर निर्भर हैं, इसकी अस्थिरता और अप्रत्याशितता गहरी चिंता का कारण है।

#### विश्व की पारिस्थितिकीयाँ अस्थिर हो रही हैं

हालाँकि वैज्ञानिकों ने 1970 के दशक में वैश्विक जलवायु परिवर्तन के बारे में चेतावनी देना प्रारम्भ कर दिया था, लेकिन 21वीं सदी में जलवायु संकट प्रमुखता से बढ़ा है। चरम मौसम की घटनाओं की लगातार बढ़ती सुची और इसपर वैज्ञानिक सहमित, ने लगभग सभी सरकारों को यह स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया है कि वैश्विक जलवायु संकट और संबंधित जैव विविधता संकट, तत्काल खतरे हैं। कोविड -19 संकट ने अस्थिर वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र और लोगों की नाजुक लंबी दुरी की "आपूर्ति श्रुंखलाओं" पर बढ़ती निर्भरता से जड़े जोखिमों को और अधिक उजागर किया है।

इसलिए हम परिवर्तन के क्षण में आ गए हैं। वैश्विक स्तर पर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक परिवर्तन अपरिहार्य प्रतीत होता है। महामारी के सामाजिक-पारिस्थितिकी संकट ने काफी हद तक राहत पहंचाई है, जिस वैश्विक प्रणाली का उपयोग हम अपना पेट भरने और अपनी बनियादी जरूरतों को परा करने के लिए करते हैं, वह उस कार्य के लिए उपयुक्त नहीं है और इस ग्रह पर हमारे अस्तित्व की स्थितियों को कमजोर कर रही है। साथ ही, हमारी स्थिति की स्पष्ट अनिश्चितता, भ्रष्टाचार और जरूरी सामाजिक मुद्दों को उजागर करने वाले बड़े पैमाने पर आंदोलन, जलवायु संकट और कोविड-19 महामारी के बढ़ते सबुतों ने, किस तरह का परिवर्तन होना चाहिए, इसके बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तावित करने के लिए विभिन्न समहों को प्रेरित किया है।

#### सरकारें, कंपनिया और जन आंदोलन इस अस्थिरता पर कैसे प्रतिक्रिया दे रहे हैं?

संकट के इन संयुक्त और अभिसरण आयामों पर विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ सामने आई हैं। हम तीन प्रमुख रुझानों की पहचान कर सकते हैं:



#### अधिनायकवाद और शक्तिशाली आदमी की सरकारें

लोकाधिकारवादी और मजबृत आदमी वाली सरकारें, जो अक्सर स्त्रीद्वेषी और नस्लवादी या ज़ेनोफोबिक होती हैं, कई स्थानों पर उन्होंने सत्ता हासिल कर ली है। वे लोकतांत्रिक संभावनाओं को सीमित करके और पुलिस, सेना और सुरक्षा और दमन की अन्य ताकतों को मजबूत करके स्थिति का समाधान करते हैं। कुछ मामलों में, ये सक्रिय रूप से जलवायु संकट की वास्तविकता से इनकार करते हैं, दूसरों में वे तर्क देते हैं कि नागरिकों की रक्षा के लिए एक मजबुत सरकार की आवश्यकता है, जबिक बाजार और निगम प्रतिक्रिया बदलते प्राकृतिक स्थिति के अनुकुल होते हैं। कुछ मामलों में, वे बाज़ारों को यह समायोजन करने में मदद करने के लिए कार्बन मूल्य निर्धारण जैसे सीमित उपायों का समर्थन करते हैं, लेकिन अक्सर वे ठोस प्रतिबद्धताओं से बचते रहते हैं।

जलवायु संबंधी प्रतिक्रियाएँ भी सुरक्षा और सैन्य दृष्टि से तय की जा रही हैं: नेता परोक्ष या स्पष्ट रूप से तर्क देते हैं कि उनके देशों को जलवायु शरणार्थियों से बचाने के लिए ऊंची दीवारों और मजबृत सीमाओं की आवश्यकता होगी। हाल के दशकों में दुनिया भर में सैन्य, सीमा और सुरक्षा खर्च में भारी वृद्धि देखी गई है। अमेरिका की 'सीमा दीवार' से लेकर यूरोप में सैन्यीकृत और घातक सीमाव्यवस्था में अरबों यूरो के निवेश तक; प्रवासी एकजुटता के अपराधीकरण से लेकर निगरानी की बढ़ती क्षमता तक, दुनिया भर की कई सरकारों ने निगरानी, नियंत्रण और दंड देने की अपनी शक्तियों का विस्तार किया है। कछ स्थानों पर जलवायु संकट का उपयोग नस्लवादी दृष्टिकोण और नीतियों को गहरा करने के बहाने के रूप में किया जाता है, श्वेत-वर्चस्ववादी और पर्यावरण फासीवादी 'लाइफबोट नैतिकता' की वकालत की जाती है, जहाँ नस्लीय लोगों को शाब्दिक और रूपक दोनों तरह से डूबने के लिए छोड़ दिया जाता है। राज्य और कम्पनिया समान रूप से सैन्यीकृत प्रतिक्रियाओं पर जोर दे रहे हैं, जो पथ्वी की जीवन देने वाली प्रणालियों के वैश्विक संकट को मख्य रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा मानते हैं, जबकि जलवायु परिवर्तन पर विशेषज्ञों के अंतर्राष्ट्रीय पैनल (आई. पी. सी. सी.) अंतर्राष्ट्रीय जलवायु समझौतों का पालन करने से इनकार और इसकी तेजी से बढ़ती अपीलों को अनदेखी कर रहे हैं।

#### नवउदारवादी और कीनेसियन: 'हरित पुंजीवाद'

उसी समय, वैश्विक जलवायु संकट के समाधान के हिस्से के रूप में एक अन्य समृह सि्कर रूप से कम्पनियों को तैयार करने के लिए आगे बढ़ा है। ये आम तौर पर अभी भी नवउदारवादी ढांचे में काम कर रहे हैं: वे मुक्त व्यापार और निवेश की सुरक्षा को राज्यों की एक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं। हालाँकि, इस परिप्रेक्ष्य में विभिन्न पहलू हैं। कुछ समूह संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के काम और सतत विकास लक्ष्यों का समर्थन करते हैं और व्यापार और निवेश शासन के सबसे खराब नकारात्मक प्रभावों को कम करके, 'हरित विकास' को प्रोत्साहित करना चाहते है ताकि नागरिक इसे सकारात्मक विकल्प के रूप में चुनें और पुंजीवाद को मानवीय बनाने में राज्य की भूमिका देखते हैं। अन्य लोग कम्पनियों को जलवायु परिवर्तन की वैश्विक प्रतिक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण अभिनेताओं के रूप में देखते हैं और मानते हैं कि कम्पनियों की सामाजिक जिम्मेदारी और प्रबद्ध निगमों का स्व-नियमन पर्यावरण विनाश और मानवाधिकारों के उल्लंघन को रोकने के लिए पर्याप्त हो सकता है।

इस 'हरित पुंजीवादी' परिप्रेक्ष्य ने 'प्रकृति के वित्तीयकरण' को जन्म दिया है - 'प्रकृति को बेचकर उसे बचाने' पर - पारिस्थितिक तंत्र और क्षेत्रों को कार्बन डाइऑक्साइंड को अवशोषित करने, जैव विविधता की रक्षा करने या पर्यावरणीय क्षति की मरम्मत में मदद करने की उनकी क्षमता के आधार पर निवेश के लिए संभावित स्रोतों में बदल दिया गया है। जबिक कम्पनियों ने इन दृष्टिकोणों को विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभाई है, उन्हें अक्सर विशाल अंतरराष्ट्रीय संरक्षण गैर सरकारी संगठनों द्वारा समर्थित किया जाता है, जो आम तौर पर उत्तरी देशों में स्थित होते हैं। (जलवाय संकट के झठे समाधानों पर कछ प्रमख स्रोतों के लिए बॉक्स देखें)।

कोविड महामारी के संदर्भ में इनमें से कईओं ने कुछ पारंपरिक रूप से प्रगतिशील भाषा अपनाई, 'एक महान पनःनियोजन', 'बेहतर निर्माण' और कभी-कभी यहां तक कि कोविड -19 महामारी से 'उचित पुनर्प्राप्ति' का भी आह्वान किया। इनमें से कुछ प्रस्तावों में कुछ वास्तविक प्रगतिशील तत्व शामिल हैं और सार्वजनिक बुनियादी ढांचे में निवेश करके और लोगों को सभ्य जीवन जीने के लिए आवश्यक सेवाएं प्रदान करके, नवउदारवादी पुंजीवाद के कारण हुए नुकसान की मरम्मत में मदद मिल सकती है। हालाँकि, सामान्य तौर पर, कम्पनियों को अभी भी मानव जाति के संभावित रक्षक के रूप में माना जाता है; लाभ के उद्देश्य और लोगों और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य और कल्याण की रक्षा के बीच तनाव को नजरअंदाज कर दिया जाता है; और लोगों को उनके जीवन, क्षेत्र और आजीविका पर अधिकार कैसे दिया जाए, इसका विश्लेषण गायब है।

#### जलवाय संकट के ग़लत समाधान के गहन अध्ययन के लिए कछ सझाव

- टी. एन. आई. (2016): ओसियन ग्रैबिंग इन डिस्गाइज़? https://www.tni.org/en/publication/blue-carbon-ocean-grabbingin-disguise\
- फ्रेंड्स ऑफ़ द अर्थ इंटरनेशनल (2020) नॉट ज़ीरो: हाउ 'नेट ज़ीरो' टार्गेट्स डिस्गाइज़ क्लाइमेट इन एक्शन https://www.foei.org/publication/not-zero-climate inaction-briefing/
- हुडविंकेड इंटो हॉटहाउस (2021) https://climatefalsesolutions.org/
- फ्रेंड्स ऑफ़ द अर्थ इंटरनेशनल (2021) चेसिंग कार्बन युनिकॉर्न: द डिसेप्शन ऑफ़ कार्बन मार्केट्स एंड नेट ज़ीरो https://www.foei.org/publication/chasingunicorns-carbon-markets-net-zero/
- फ्रेंड्स ऑफ़ द अर्थ इंटरनेशनल (2021) नेचर बेस्ड सोलुशन्स: ए वुल्फ इन शीप क्लोथिंग https://www.foei.org/publication/nature-based-solutions-awolf-in-sheeps-clothing/

## लोकप्रिय आंदोलन और जस्ट ट्रांज़िशन

अंतिम लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस अस्थिर स्थिति ने प्रणालीगत परिवर्तन पर जोर देने वाले, नए वैश्विक सामाजिक आंदोलनों के उदय को उकसाया है। 1990 के दशक से परिवर्तन-वैश्वीकरण और खाद्य संप्रभुता आंदोलनों ने नवउदारवादी पंजीवाद की बड़े पैमाने पर आलोचना को आगे बढाया है। 21वीं सदी में विभिन्न प्रकार के आंदोलनों ने व्यवस्था परिवर्तन की एक साझा भाषा अपनाई है, उनका तर्क है कि मानवाधिकारों के हनन, राजनीतिक और सामाजिक नुकसान और जलवायु संकट को केवल हमारे संपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रणाली और राजनीतिक परिवर्तन से ही संबोधित किया जा सकता है। आंदोलन अक्सर एक अंतर्विरोधी लेंस का उपयोग करते हैं, यह तर्क देते हुए कि लिंगवाद और पितुसत्ता, नस्लवाद और हिंसा के अन्य रूप और उत्पीड़न की प्रणालियाँ पंजीवादी व्यवस्था की मूलभूत विशेषताएं हैं। तेजी से, ये अलग-अलग आंदोलन जस्ट ट्रांज़िशन के बैनर तले एक साथ आने लगे हैं। इस प्राइमर का शेष भाग इस विचार को उजागर करने पर केंद्रित है।



## जस्ट ट्रांज़िशन क्या है?

#### यह अवधारणा कहाँ से आई?

जस्ट ट्रांज़िशन, का जन्म उत्तरी अमेरिका में संबद्ध श्रम और सामुदायिक संघर्षों से हुआ है। यह अवधारणा नस्लीय व कम आय वाले समुदायों के श्रमिक संघों और पर्यावरण न्याय समुहों द्वारा बनाई गई थी, जिन्होंने उन उद्योगों को चरणबद्ध तरीके से खत्म करने की आवश्यकता महसूस की जो श्रमिकों, सामुदायिक स्वास्थ्य और ग्रह को नुकसान पहुंचा रहे थे। इस परिवर्तन के साथ श्रमिकों के लिए गुणवत्तापूर्ण, अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियों के लिए उचित मार्ग खोजने का प्रयास कर रहे थे।

शुरू से ही, आयोजकों ने इस बात पर जोर दिया कि सामाजिक न्याय, परिवर्तन के केंद्र में होना चाहिए। जस्ट ट्रांज़िशन का मतलब हानिकारक उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के लिए अच्छी नौकरियाँ सनिश्चित करने से कहीं अधिक था। पर्यावरणीय नस्लवाद से निपटने के लिए समुदायों के साथ एकजुटता और गठबंधन में कार्य करने की आवश्यकता थी।

ऑयल केमिकल एटॉमिक वर्कर्स इंटरनेशनल युनियन (OCAW) में टोनी मैज़ोची और अन्य लोगों ने 1970 के दशक में जस्ट ट्रांज़िशन के पीछे की अवधारणाओं को विस्तत किया और चल रहे काम का वर्णन करने के लिए 1990 के दशक में यह शब्द को गढा था। जहरीली सामग्रियों के लिए जिम्मेदार श्रमिकों के एक संघ के प्रमुख के रूप में, मैज़ोची ने श्रमिकों के स्वास्थ्य और पर्यावरण पर इसके प्रभाव को समझा और विषाक्त-निर्भर समाज से सुरक्षित और कम विषाक्त समाज में न्यायसंगत परिवर्तन के लिए सामाजिक और आर्थिक नीतियों को तैयार करने के लिए अन्य आंदोलनों के साथ चर्चा शुरू की। प्रारंभ में, OCAW, पर्यावरण न्याय आंदोलन और मुख्यधारा के पर्यावरण संगठन एक दूसरे से आँख मिलाने में असमर्थ रहे क्युंकि कुछ परमाणु-विरोधी कार्यकर्ता परमाणु सुविधाओं में तोड़फोड़ करने और संपत्ति को नुकसान पहुंचाने, श्रमिकों की सुरक्षा को खतरे में डालने जैसी रणनीति में लगे हुए थे। इससे संभावित साझा संघर्षों के बावजूद, आंदोलनों के बीच विभाजन पैदा हो गया।

#### अंतरराष्ट्रीय आयोजन में जस्ट ट्रांज़िशन एक प्रमुख अवधारणा कैसे बन गई?

1990 के दशक के मध्य में OCAW ने श्रमिकों, सुविधाओं के पास रहने वाले मुख्य रूप से स्वदेशी, नस्लीय और लैटिनक्स समुदायों और उन स्वदेशी समुदायों जिनके क्षेत्र उनसे प्रभावित थे, इनके बीच की दुरी को कम करने के प्रयास में पर्यावरण न्याय आंदोलन के नेताओं से संपर्क किया। ये नेता युनियनों और संगठित श्रमिकों के महत्त्व को समझते थे और उनका सम्मान करते थे।

स्वदेशी पर्यावरण नेटवर्क के टॉम गोल्डटूथ, पर्यावरण और आर्थिक न्याय के लिए साउथवेस्ट नेटवर्क के रिचर्ड मुर, एशियाई प्रशांत पर्यावरण नेटवर्क के पाम ताऊ ली, दक्षिणी आयोजन समिति के कोनी टकर और साउथवेस्ट वर्कर्स युनियन के रूबेन सोलिस ने लेबर इंस्टीट्यूट से लेस लियोपोल्ड और OCAW से जो एंडरसन और बाद में बॉब वेजेज बैठकों की एक श्रंखला शरू की जिसने पर्यावरणीय प्रदुषण के विनाशकारी प्रभाव को संयुक्त रूप से संबोधित करने के तरीके खोजने और उत्पादन के अधिक पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ और स्वस्थ साधनों में परिवर्तन के लिए विचारों और दृष्टिकोणों का पता लगाने के लिए काम किया। इन चर्चाओं के फलस्वरूप डॉ. जेनिस व्यू और जोस ब्रावो के नेतृत्व में जस्ट ट्रांज़िशन एलायंस (जे. टी. ए.) की स्थापना हुई, जो आज भी एक शक्तिशाली आंदोलन माध्यम के रूप में जारी है।

जैसे-जैसे उत्तरी अमेरिका में जस्ट ट्रांज़िशन की अवधारणा विकसित हो रही थी, वैश्विक आंदोलनों को भी इसी तरह की चुनौतियों का सामना करना पड रहा था। खदानों, बांधों और अन्य खनन परियोजनाओं के खिलाफ संघर्ष, बेदखली के नए रूप, बिगडते श्रम अधिकार और शोषणकारी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ने श्रमिक, नारीवादी, किसान, छात्र और पर्यावरण आंदोलनों के बीच नए गठजोड़ को जन्म दिया। इसने 'एक और दुनिया संभव है' और 'एक ऐसी दुनिया जहाँ कई दुनियाएं को समेकित करती ही' जैसे बैनरों के तहत मौजूदा मॉडल के विकल्पों के बारे में साझा चर्चा को उकसाया। 1990 के दशक और 21वीं सदी के शुरुआती वर्षों में विविध आंदोलनों को चर्चा के लिए साझा स्थानों पर एक साथ कार्रवाई के कार्यक्रम और आम विश्लेषण विकसित करने के लिए एक सचेत प्रयास किया गया था।

ये चर्चाएँ अंततः फलदायी रहीं। पर्यावरणीय न्याय के लिए लंबे समय से चले आ रहे आंदोलनों ने उनके गठबंधनों को मजबत किया और वैश्वीकरण विरोधी/वैकल्पिक आंदोलनों के साथ मिलकर उनके साझा विश्लेषणों को गहरा किया। जैसे-जैसे विश्व व्यापार संगठन और दुनिया भर में नवउदारवादी व्यापार और निवेश व्यवस्था के विरोध बढ़ा, कम्पनियों और उत्तरी सरकारों ने अंतरराष्ट्रीय जलवायु वार्ता को एक ऐसे स्थान के रूप में जब्त कर लिया जहाँ वे नवउदारवादी कॉर्पोरेट एजेंडे को आगे बढा सकते थे। प्रतिक्रिया में, आंदोलनों ने

प्रभावी व्यापार शासन और पर्यावरण विनाश के बीच संबंधों के बारे में, नई और मजबूत जागरूकता विकसित की और आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय संघर्षों को अभिन्न रूप से जुड़े हुए देखते, मजबूत प्रणालीगत दृष्टिकोण विकसित किया। वैश्वीकरण-विरोधी/ वैकल्पिक आंदोलनों से प्राप्त ज्ञान के आधार पर, जलवायु न्याय संगठनों और ट्रेड यूनियनों ने कम्पनियों और राज्यों को चुनौती देते हुए, अंतरराष्ट्रीय जलवायु वार्ता में काम करना शुरू कर दिया।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार संघों द्वारा सबसे महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेपों में से एक, 2009 में कोपेनहेगन में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन सी. ओ. पी. 15 में था, जहाँ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संघ परिसंघ (आई. टी. यू. सी.) जस्ट ट्रांज़िशन का एक स्पष्ट संदेश लेकर आया। जैसे-जैसे यह स्पष्ट होता गया कि जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए आकस्मिक परिवर्तन आवश्यक होंगे, यूनियनों ने श्रमिकों के अधिकारों का बचाव किया और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया कि वे परिवर्तन की लागत श्रमिकों का वहन न करना पड़े। इसके परिणामस्वरूप जस्ट ट्रांज़िशन को अंततः 2015 पेरिस समझौते की प्रस्तावना में शामिल किया गया। हाल ही में, प्रभावित समुदायों ने, श्रमिकों की जरूरतों से परे अन्य कमजोर समुदायों के अधिकारों और जरूरतों को शामिल कर, जस्ट ट्रांज़िशन के विश्लेषण को व्यापक बनाने का प्रयास शुरू कर दिया है।

इन चर्चाओं ने इस बात का अधिक स्पष्ट विश्लेषण किया की विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न (जाति, वर्ग, लिंग आदि) एक-दूसरे के साथ कैसे जुड़ते हैं और वर्तमान आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में कैसे अंतर्निहित हैं।

#### संयुक्त राज्य अमेरिका में जस्ट ट्रांज़िशन का एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित करना

2013 की गर्मियों में संयुक्त राज्य अमेरिका में, 30 से अधिक संगठनों ने क्लाइमेट जस्टिस अलायंस और आवर पवार कैंपेन शुरू किया - जो देश की आर्थिक प्राथमिकताओं को निष्कर्षण, गंदी ऊर्जा से दूर स्थानांतिरत करने का एक राष्ट्रीय प्रयास था। इसमें मिशिगन, मिसिसिपी, एरिज़ोना, कैलिफ़ोर्निया, केंटिकी और लगभग 50 अन्य प्रभावित समुदायों में पथप्रदर्शक अभियान शामिल थे। आवर पवार कैंपेन निष्कर्षण अर्थव्यवस्था की सबसे खराब अभिव्यक्तियों का सीधे सामना करने की जस्ट ट्रांज़िशन रणनीति में निहित है - जिसमें पहाड़ की चोटी को हटाना, विषाक्त अपशिष्ट भस्मीकरण और तेल रिफाइनिरयां शामिल हैं। साथ ही, यह स्थानीय विकल्प बनाने और मांगों को आगे बढ़ाने का प्रयास करता है, जो राज्य के संसाधनों को शून्य अपशिष्ट, क्षेत्रीय खाद्य प्रणाली, सार्वजनिक परिवहन, स्वच्छ सामुदायिक ऊर्जा, कुशल, किफायती और टिकाऊ आवास और पारिस्थितिकी तंत्र बहाली की ओर पुनर्निर्देशित करता है। आवर पावर कैंपेन संसाधनों को स्थानीय समुदायों की ओर पुनर्निर्देशित करने के लिए प्रयास करता है, जो धरती माता और प्रकृति की पारिस्थितिक सीमाओं के प्रति परस्पर निर्भरता और जिम्मेदारी के आधार पर अर्थव्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं।

जलवायु को लेकर लामबंदी मजबूत हुई और 'प्रणाली परिवर्तन' को लेकर विशेष रूप से लैटिन अमेरिका में चर्चा अधिक प्रमुख हो गई। 2012 में रियो +20 पृथ्वी शिखर सम्मेलन के समानांतर, पीपल्स शिखर सम्मेलन ने आंदोलनों को आर्थिक और पर्यावरणीय विनाश के अंतर्संबंध को स्पष्ट करने में मदद की और 'वास्तविक कारणों', 'झूठे समाधान' और 'वास्तविक समाधान' के आधार पर एक विश्लेषण को लोकप्रिय बनाया। वास्तविक समाधान शक्ति, सरलता और एकजुटता पर आधारित होते हैं, जबिक झुठे समाधान कॉर्पोरेट स्वामित्व और तकनीकी सुधारों पर आधारित होते हैं। इस महत्त्वपूर्ण स्थान पर युनियनों, श्रमिक संगठनों और समुदायों की भागीदारी ने जस्ट ट्रांज़िशन को इस ढांचे में एकीकृत करने में मदद की।

जस्ट ट्रांज़िशन को विभिन्न आंदोलनों द्वारा एक शक्तिशाली एकीकृत ढांचे के रूप में तेजी से पहचाना जा रहा है। कई आंदोलन सोचते हैं कि यह रणनीतिक गठबंधनों को मजबत करने और जटिल ऊर्जा संरचनाओं का बेहतर विश्लेषण करने में मदद कर सकता है, जो आज दुनिया में परिवर्तन में बाधा उत्पन्न कर रहे है।

#### कैसे जस्ट ट्रांज़िशन को हमेशा की तरह व्यापार समर्थन के लिए सहयोजित किया जा रहा है?

जैसे-जैसे जस्ट ट्रांज़िशन वाक्यांश का अधिक व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा, यह एक विवादित शब्द बन गया है और शक्तिशाली लोगों ने अपने हितों के अनुरूप इस शब्द को फिर से परिभाषित करने का प्रयास किया है। 2015 के पेरिस समझौते की प्रस्तावना में जस्ट ट्रांज़िशन शब्द को शामिल करने से कई नए लोगों में रुचि पैदा हुई। यह समावेशन अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक आंदोलन के साथ-साथ वैश्वीकरण विरोधी/वैकल्पिक आंदोलनों की वकालत का परिणाम था और इस विचार की बढ़ती शक्ति और प्रासंगिकता को दर्शाता है। हालाँकि, इससे उन कंपनियों और सरकारों द्वारा नई व्याख्याओं की लहर भी पैदा हुई जो जस्ट ट्रांजिशन की संकुचित समझ से लाभान्वित होती हैं। कम्पनियों और उनके सहयोगियों ने ऐसी परिभाषाओं को आगे बढ़ाने की कोशिश की है जो सामान्य रूप से व्यापार जारी रखने या अतिरंजित रूप में निष्कर्षण गतिविधियों को ग्रीनवॉशिंग के माध्यम से गहरा करने का औचित्य साबित करेगी।

इनमें से कई लोग कल्पना करते है की कॉपोरेट नेतृत्व वाला जस्ट ट्रांज़िशन आंदोलनों द्वारा विकसित परिवर्तन की दृष्टि के बिल्कुल विपरीत है। 2010 की शुरुआत से, जलवायु न्याय आंदोलनों के प्रमुख समृह इस बात का व्यापक विश्लेषण विकसित कर रहे हैं कि, जस्ट ट्रांज़िशन का वास्तव में क्या मतलब है, इसमें कौन से प्रणालीगत परिवर्तन शामिल होने चाहिए और इसे कैसे आगे बढ़ाया जाए। जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, ये दृष्टिकोण सामाजिक न्याय को जस्ट ट्रांज़िशन की परियोजना के बिल्कुल मूल के रूप में देखते हैं और

तर्क देते हैं कि असमानता और प्रणालीगत उत्पीड़न के लिंग आधारित, नस्लीय और वर्ग आधारित रूपों से निपटे बिना निष्कर्षण और जीवाश्म-ईंधन आधारित अर्थव्यवस्था की समस्याओं को हल नहीं किया जा सकता है।

दूसरी ओर, जस्ट ट्रांज़िशन के संकीर्ण विचारों को नवउदारवादी थिंक टैंक और सामाजिक संगठनों, अंतरराष्ट्रीय निगमों और अधिकांश आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओ. ई. सी. डी.) सरकारों द्वारा आगे बढाया जा रहा है। ये दृष्टिकोण अक्सर 'बाजार समाधान' बनाने पर केंद्रित होते हैं; नई 'कार्बन तटस्थ' प्रौद्योगिकियों का विकास और तैनाती; वायुमंडलीय कार्बन को पकड़ने और इसे पृथ्वी पर वापस लाने के लिए तकनीकी रूप से संचालित परियोजनाओं को लागू करना (शुल्क के लिए); और वैश्विक दक्षिण के स्वदेशी लोगों. श्रमिकों, महिलाओं, समुदायों और राष्ट्रों को इन समाधानों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ये विचार बाजार प्रोत्साहनों के माध्यम से कार्यान्वित तकनीकी समाधानों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसमें इस बात का बहत कम या कोई विश्लेषण नहीं होता है कि किसी समदाय या विश्व स्तर पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। दूसरे शब्दों में, यह अनकही धारणाओं पर टिके रहते हैं कि वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र समस्याएं काफी हद तक गलत प्रौद्योगिकियों (विशेष रूप से गलत ईंधन स्रोत) के हमारे उपयोग से जुड़ी हुई हैं और इसका समाधान मौजुदा आर्थिक संरचनाएं और प्रणालियाँ (बाज़ार, वेतन श्रम, आदि) माध्यम से लाग किया जा सकता है और किया जाना चाहिए।

इन दृष्टिकोणों में, सामाजिक न्याय को जलवायु परिवर्तन की आपदाओं को रोकने की तलाश में एक 'परक' के रूप में देखा जाता है। वर्तमान विश्व व्यवस्था को चलाने वाले असमान शक्ति संबंधों को संबोधित करने के बजाय, वे उन लोगों को प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो वर्तमान में व्यवस्था पर हावी हैं और स्वेच्छा से आत्म-सधार के उपाय अपनाते हैं। इस तर्क में, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि समाधान वर्तमान प्रणाली में सबसे शक्तिशाली लोगों के लिए आकर्षक हों, उदाहरण के लिए, कार्बन बाजारों में सट्टेबाजी के माध्यम से, या बड़े पैमाने पर 'अक्षय' ऊर्जा का उत्पादन करके यह सनिश्चित करता है कि वे लाभ प्राप्त करना जारी रख सकें। संक्षेप में, जस्ट ट्रांजिशन का यह दृष्टिकोण परिवर्तन का नहीं बल्कि समायोजन और सधार का है।

कुछ कम्पनियाँ जलवायु संकट और उस पर प्रतिक्रिया को निष्कर्षणवाद को गहरा करने और लाभ के लिए नए मोर्चे खोलने के अवसर के रूप में देखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। कुछ मामलों में, यह बढ़ती सत्तावादी प्रवृत्ति से जुड़ा है, क्योंकि कम्पनिया सरकारों के साथ सहयोग करते हैं और जलवाय परिवर्तन पर प्रतिक्रिया देने के प्रयासों के हिस्से के रूप में, गरीब और हाशिए पर रहने वाले लोगों पर बड़े पैमाने पर परियोजनाएं थोपने के लिए जलवायु अराजकता के खतरे का उपयोग करते हैं। इसमें बड़े पैमाने पर तथाकथित नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएं शामिल हैं, जैसे जलविद्यत बांध या पवन फार्म जो स्थानीय समुदायों को विस्थापित करते हैं,

सौर पैनलों और पवन चक्कियों के लिए दुर्लभ-पृथ्वी खनिज प्रदान करने वाली निष्कर्षण परियोजनाएं, लापरवाह भू-इंजीनियरिंग प्रयोग जिसमे स्वदेशी लोगों, वन के वासी (आदिवासी), चरवाहे, छोटें पैमाने के मछुआरे और किसान को उनकी भूमि और क्षेत्रों से जबरन हटाने वाली परियोजनाएं शामिल हैं। स्वदेशी लोगों, किसानों और अफ्रीकी वंशज समुदायों, श्रमिकों और प्रभावित समुदायों को सत्ता छोड़ने की अंतर्निहित प्रतिबद्धता के बिना, जलवायु अराजकता के डर का इस्तेमाल नए प्रकार के शोषण और मुनाफाखोरी के लिए किया जा सकता है।

यह एक कारण है कि सामाजिक न्याय को मूल रखते हुए जस्ट ट्रांज़िशन की व्यापक दृष्टि महत्त्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण मौजूदा विश्व पूंजीवादी व्यवस्था में बदलाव या सुधार के बजाय प्रणालीगत परिवर्तन की आवश्यकता पर केंद्रित है। इसका तर्क है कि धरती माता और उसके सभी निवासियों के साथ सही संबंध बनाने के लिए, हमें व्यवस्था को निचे से ऊपर तक बदलना होगा। क्लाइमेट जस्टिस एलायंस (सी. जे. ए.), जो अमेरिका स्थित एक अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन है, ने इस तरह के सबसे स्पष्ट दृष्टिकोणों में से एक को व्यक्त किया है। सी. जे. ए. ने जस्ट ट्रांज़िशन को 'एक दृष्टि-आधारित, एकीकृत और स्थान-आधारित सिद्धांतों, प्रक्रियाओं और प्रथाओं के रूप में परिभाषित किया है जो निष्कर्षण अर्थव्यवस्था से पुनर्योजी अर्थव्यवस्था में स्थानांतरित करने के लिए आर्थिक और राजनीतिक

शक्ति का निर्माण करता है। इसका मतलब है उत्पादन और उपभोग चक्र को समग्ररूप से अपशिष्ट मक्त बनाना। परिवर्तन, स्वयं उचित और न्यायसंगत होना चाहिए; अतीत की हानियों का निवारण करना और क्षतिपूर्ति के माध्यम से भविष्य के लिए शक्ति के नए संबंध बनाने में सक्षम होना चाहिए। यदि परिवर्तन की प्रक्रिया न्यायसंगत नहीं है, तो परिणाम कभी भी न्यायसंगत नहीं होगा। जस्ट ट्रांज़िशन यह बताता है कि हम कहाँ जा रहे हैं और हम वहाँ कैसे पहुंचेंगे।'

वर्तमान विश्व व्यवस्था में शक्ति संबंधों में परिवर्तन किए बिना हम वहाँ नहीं पहुंच सकते जहाँ हमें जाना है। पूंजीवाद उत्पीड़न की एकमात्र व्यवस्था नहीं है जिसे उखाड़कर रूपांतरित किया जाना है और यह उत्पीडन की अन्य प्रणालियों से अलग होकर काम नहीं करती है। न्यायपूर्ण परिवर्तन के लिए उपनिवेशवाद, पितृसत्ता, साम्राज्यवाद, जातिवाद और श्वेत वर्चस्व को भी नष्ट किया जाना चाहिए। हालाँकि इनमें से प्रत्येक प्रणाली की अपनी अनुठी गतिशीलता और प्रवर्तन के तरीके हैं, वे सभी एक दूसरे से जुड़े हए हैं और एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं।

#### हम जस्ट ट्रांज़िशन कैसे तैयार कर सकते हैं?

इसलिए, यदि जस्ट ट्रांज़िशन में सामाजिक और पर्यावरणीय न्याय, नारीवाद, नस्लवाद-विरोध और मानव अधिकारों की पूर्ण प्राप्ति और धरती माता की पवित्रता पर आधारित एक पुनर्योजी विश्व-प्रणाली की ओर पुंजीवादी विश्व व्यवस्था का लोकतांत्रिक परिवर्तन शामिल है, तो इस परिवर्तन का क्या मतलब है? इसका क्या रूप और वास्तविक व्यवहार में क्या अनुभव है? हम आठ गैर-परक्राम्य प्रोग्रामेटिक 'मुद्दों' की पेशकश करते हैं जिनके बारे में हमारा मानना है कि वास्तविक परिवर्तन लाने के लिए जस्ट ट्रांज़िशन में इसे शामिल किया जाना चाहिए। हालाँकि, ये संपूर्ण नहीं हैं और दुनिया भर के समुदाय और आंदोलन जस्ट ट्रांज़िशन के मूल सिद्धांतों को विस्तृत करना जारी रख रहे हैं।

### पूर्व उपनिवेश की स्वतंत्रता और स्वदेशी संप्रभुता की बहाली

यह दुनिया के राष्ट्र-राज्यों से स्वदेशी और पारंपरिक लोगों के अधिकारों का सम्मान, सुरक्षा, सभी लोगों के अधिकारों की पूर्ति करने और सम्मान को नीति-निर्माण के केंद्र में रखने का आह्वान करता है। यह उपनिवेशित देशों को अपने

स्वयं के आत्मनिर्णय, संप्रभुता और विकास के दृष्टिकोण को विकसित करने और पुरी तरह से साकार करने, औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी हस्तक्षेप से मुक्त होने और उचित क्षतिपूर्ति और पुनर्स्थापन द्वारा समर्थित होने की स्वतंत्रता का भी आह्वान करता है। इसमें उनकी पारंपरिक भूमि की स्वदेशी संप्रभुता की बहाली शामिल है, लेकिन यह यहीं तक सीमित नहीं है। साथ ही, पारंपरिक किसान, मछुआरे, चरवाहे, अफ़्रीकी-वंशज और अन्यथा हाशिए पर रहने वाले समुदाय जो अक्सर भूमि, महासागरों, क्षेत्रों और पारंपरिक पारिस्थितिक तंत्रों के साथ घनिष्ठ संबंधों में रहते हैं, उन्हें भी मान्यता दी जानी चाहिए और उनको निर्णयों में पूरी तरह से भाग लेने के लिए सक्षम किया जाना चाहिए जो उनके जीवन और उन क्षेत्रों तथा संसाधनों पर प्रभाव डालते हैं जिन पर वे निर्भर हैं।

स्वदेशी लोगों ने भी अपने पैतृक ज्ञान और मुख्य राजनीतिक प्रतिबद्धताओं के परिप्रेक्ष्य से जस्ट ट्रांज़िशन की अपनी प्रक्रियाएं शुरू की हैं - उदाहरण के लिए, उत्तरी अमेरिका में, जस्ट ट्रांज़िशन के स्वदेशी सिद्धांत विकसित किए गए हैं। ऐसे राजनीतिक कार्यक्रमों का निर्माण करना जो प्रकृति के साथ घनिष्ठ और अधिक टिकाऊ संबंधों में रहने वाले स्वदेशी और पारंपरिक समुदायों के ज्ञान, अधिकारों और राजनीति को जो पारिस्थितिक तंत्र, मिट्टी, वाटरशेड और जलभूतों की बहाली के लिए; जैव विविधता को पुनर्जीवित करने और कार्बन चक्र को पुनर्संतुलित करने के लिए; और पृथ्वी के साथ सही संबंध में एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, को मान्यता देते हैं।

### क्षतिपूर्ति और पुनर्स्थापन

सामाजिक न्याय के बिना, ऊर्जा परिवर्तन केवल पूंजीवादी यथास्थिति को हरित करने का एक साधन होगा। न्यायसंगत होने के लिए, परिवर्तन को उपनिवेशित क्षेत्रों और लोगों की लूट के माध्यम से हुई ऐतिहासिक क्षिति को ठीक करना और मरम्मत करना होगा। उपनिवेशवाद, नरसंहार, दासता और साम्राज्यवाद मानवता के खिलाफ अपराध हैं, जिनका निवारण क्षतिपूर्ति और विभिन्न प्रकार की पुनर्स्थापन के माध्यम से किया जाना चाहिए। विशिष्ट स्थानीय और राष्ट्रीय संदर्भों में, अतिरिक्त ऐतिहासिक क्षति को भी ठीक करने की आवश्यकता हो सकती है।

पूरे अमेरिका में स्वदेशी और पारंपरिक समुदायों की संप्रभुता की बहाली; स्वदेशी सहमति से अफ़्रीकी वंशजों को प्रबंधन के लिए भूमि का प्रावधान; चुराई गई सांस्कृतिक विरासत का प्रत्यावर्तन और/या लाभ के लिए विनियोजित पारंपरिक ज्ञान का मुआवजा; सभी श्रमिकों द्वारा समाज में किए गए महत्त्वपूर्ण योगदान की मान्यता; औपनिवेशिक शक्ति संबंधों को बनाए रखने के लिए उपनिवेशित राष्ट्रों पर लगाए गए अन्यायपूर्ण ऋणों का उन्मूलन; दक्षिणी से उत्तरी देशों की ओर अवैध पंजी प्रवाह का अंत; असंतुलित और अनुचित व्यापार व्यवस्थाओं का अंत, जो उपनिवेशित देशों को हाशिए पर धकेलती रहती हैं; युरोपीय शासन, लूट या हिंसा के अधीन उपनिवेशित, गुलाम या औपनिवेशिक रूप से रहने वाले सभी लोगों को वित्तीय मुआवजे और प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण; और देखभाल और प्रजनन कार्य के लिए उचित मूल्यांकन और उचित भुगतान आदि कुछ उपायों में शामिल हो सकते हैं। वित्तीय संसाधनों का यह प्रवाह उन अर्थव्यवस्थाओं और समाज के क्षेत्रों में वापस आ सकता है जहाँ से उन्हें लुटा गया था, जिससे आवश्यक वैश्विक परिवर्तन को वित्तपोषित करने में मदद मिल सकती है।

#### पैतृक एवं विज्ञान आधारित समाधान

यह महत्त्वपूर्ण है की हम जलवायु संकट का समाधान क्यों, कैसे और किससे प्राप्त करते हैं। जो लोग स्वस्थ, जीवन-निर्वाह भूमि का प्रबंधन काफी लम्बे अर्से स करते आ रहे हैं, यह महत्त्वपूर्ण है कि हम पहले उन लोगों और समुदायों से सीखें। स्वदेशी और पारंपरिक समुदाय हजारों वर्षों के अवलोकन और अपने वातावरण में प्राणियों के साथ सहवास के आधार पर अर्जित ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करते रहते हैं। दुनिया भर में पारंपरिक मछली पकड़ने, खेती और घुमन्तु समुदाय ने इसी तरह प्राकृतिक दुनिया के बारे में जानने के अपने तरीके और समृद्ध ज्ञान का निर्माण किया है।

वैश्विक स्तर पर परिणाम उत्पन्न करने और गणना करने के साधन के रूप में, इस ज्ञान को विज्ञान की टिप्पणियों और पद्धतियों से पुष्ट किया जाना चाहिए। स्वदेशी लोग सदियों से पंजीवाद द्वारा उत्पन्न व्यवधानों के बारे में दुनिया को चेतावनी दे रहे हैं और विज्ञान ने एक

सदी से भी अधिक समय से इन चेतावनियों की पृष्टि की है। दोनों परंपराएँ दशकों से परिवर्तनकारी समाधानों का आह्वान करती रही हैं। दुनिया को बदलने के लिए हमें जिस प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता है, उसके निर्माण के लिए ज्ञान की विभिन्न परंपराओं को एक-दूसरे के साथ संवाद में लाना महत्त्वपूर्ण है। ऐसा करने के लिए, हमें ज्ञान और प्रौद्योगिकियों की आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण करना चाहिए और यह पता लगाना चाहिए कि वे किस लिए हैं, वे किसके हितों की सेवा करते हैं और उनके उपयोग से किसे लाभ होता है। वैज्ञानिक समझ को ऐसे तरीकों से विकसित किया जाना चाहिए जो दुनिया भर में स्वदेशी, स्थानीय और पारंपरिक ज्ञान का सम्मान करें, उसे मजबूत करें और आलोचनात्मक रूप से सीखें। हमारे जानने के तरीके का यह परिवर्तन, जिसे कभी-कभी 'ज्ञानात्मक न्याय' के रूप में जाना जाता है जो ट्रांज़िशन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

#### कृषि पारिस्थितिकी, खाद्य संप्रभुता और कृषि सुधार

एग्रोइकोलॉजी स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र के साथ सामंजस्य बिठाकर मानव उपभोग के लिए प्रोटीन, फाइबर और फलों का उत्पादन करने के लिए जीवनदायी, सहस्राब्दी पुरानी कृषि पद्धतियों पर आधारित स्थायी कृषि का विज्ञान है। कृषि पारिस्थितिकी पर न्येलेनी फोरम के शब्दों में, यह 'एक आर्थिक प्रणाली के प्रतिरोध का एक प्रमुख रूप है जो जीवन से अधिक महत्त्व लाभ को देता है'। कृषि पारिस्थितिकी मुलतः राजनीतिक और न्याय-उन्मुख है। यह प्रकृति से सीखना चाहता है और स्वदेशी संस्कृतियों, पारंपरिक मछुआरों, किसानों और चरवाहों और अन्य लोगों के ज्ञान का उपयोग करता है जो सदियों से भिम, महासागरों, क्षेत्रों और उनके गैर-मानव निवासियों के साथ घनिष्ठ संबंधों में रह रहे हैं। आम तौर पर 'एक विज्ञान, एक अभ्यास और एक आंदोलन' के रूप में वर्णित, कृषि पारिस्थितिकी दुनिया भर के विभिन्न लोगों को भोजन के उत्पादन के तरीके की रक्षा करने और निष्कर्षण के बजाय बहाली पर भूमि के साथ संबंधों को आधार बनाने के लिए एक साथ लाती है।

कृषि पारिस्थितिकीय खाद्य उत्पादन से, खाद्य उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन के उपयोग और उत्सर्जन में भारी कमी आएगी, जहरीले उर्वरकों को खत्म किया जाएगा और विविध और समद्भ पारिस्थितिकी प्रणालियों को बहाल करने में मदद मिलेगी। लेकिन यह उपकरणों या तकनीकों के एक समृह से कहीं अधिक है: 'कृषि पारिस्थितिकी राजनीतिक है; इसके लिए हमें समाज में शक्ति की संरचनाओं को चुनौती देने और बदलने की आवश्यकता है।' इस तरह, कृषि पारिस्थितिकी खाद्य संप्रभुता और दुनिया भर में ग्रामीण क्षेत्रों और समुदायों की सुरक्षा के लिए चल रहे संघर्षों से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। उन क्षेत्रों में खाद्य संप्रभुता और कृषि पारिस्थितिकी की रक्षा जहाँ वें अभी भी प्रचलित हैं और वर्तमान औद्योगिक खाद्य प्रणालियों का परिवर्तन प्रमुख हैं, जो जस्ट ट्रांज़िशन का एक प्रमुख स्तंभ है।

#### भूमि, भोजन, पारिस्थितिकी तंत्र और क्षेत्रो आदि के अधिकारों की मान्यता

जस्ट ट्रांज़िशन के लिए व्यापक और वैश्विक स्तर पर भूमि पुनर्वितरण, एक परम आवश्यकता है। भूमि, जल, वनों और महासागरों को वस्तुओं के रूप में या लाभ के लिए निष्क्रिय रूप से दोहन की प्रतीक्षा कर रहे 'संसाधनों' के रूप में स्वीकार करना, वर्तमान संकट का एक प्रमुख कारण है। इतिहास में और आज कई स्वदेशी, पारंपरिक और वैकल्पिक समाजों की प्रथाओं में, हम सामृहिक रूप से लोगों की भूमि तक पहुंच के साथ-साथ निर्वाह के अन्य न्यायसंगत और टिकाऊ साधनों के प्रबंधन के लिए प्रणालियाँ मौजूद हैं। भूमि को निजी संपत्ति के रूप में देखने की आवश्यकता नहीं है, जहाँ एक व्यक्ति जो चाहे वह कर सकता है। समुदाय, राज्य और व्यक्तियों के समृह कई अलग-अलग कानुनी संरचनाओं के तहत संसाधनों का सामहिक और लोकतांत्रिक तरीके से प्रबंधन कर सकते हैं।

'कॉमन्स' - या सामृहिक रूप से प्रबंधित भूमि, जल, वायु, मिट्टी या प्राकृतिक विरासत, जिस तक समुदाय के कई लोगों को विशिष्ट तरीकों से पहुंचने और उपयोग करने का अधिकार है -भूमि के साथ हमारे संबंधों पर पुनर्विचार करने के लिए एक मॉडल हो सकता है। एक उचित परिवर्तन के लिए संसाधनों को सामृहिक और लोकतांत्रिक तरीके से प्रबंधित करने के विभिन्न तरीकों की रचनात्मक खोज की आवश्यकता होगी और 'पर्ण स्वामित्व' के मॉडल से आगे बढ़ना होगा, जिस मॉडल ने भूमि या अन्य संसाधनों के कथित मालिकों को व्यापक रूप से बहत कम या कोई जवाबदेही के बिना भृमि का शोषण और नष्ट करने की अनुमृति दी है। चूँकि दुनिया में वर्तमान भूमि वितरण बहुत अन्यायपूर्ण है, हमें उन सिद्धांतों के बारे में भी गहराई से सोचना चाहिए जो भूमि सुधार का मार्गदर्शन कर सकते हैं। "मान्यता, पुनर्स्थापन, पुनर्वितरण, पुनर्जनन और प्रतिनिधित्व" के मुल सिद्धांतों का एक प्रारूप हैं जो उस तरह के भूमि सुधार को आकार दे सकते हैं और मार्गेंदर्शन कर सकते हैं और जस्ट ट्रांज़िशन का समर्थन करते हैं।

#### सहकारी समितियाँ, सामाजिक और सार्वजनिक उत्पादन

जस्ट ट्रांज़िशन का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हमारे समाज में, श्रम में परिवर्तन लाना और लोगों के लिए सार्थक, सभ्य, मूल्यवान कार्यों में संलग्न होने के अवसरों का निर्माण करना है। जैसा कि कोविड-19 संकट से प्रतीत हुआ, तथाकथित 'आवश्यक श्रमिक' उत्पादन के केंद्र में हैं। उनका काम हमारे समाज को क्रियाशील रखता है। फिर भी, वे अक्सर खतरनाक, गंदी, कम सुरक्षा के साथ, अपने काम पर न्यूनतम नियंत्रण के साथ और अपमानजनक स्थितियों में काम करते हैं। श्रम करने वाले और दूसरे लोगों के श्रम से लाभ कमाने वालों के बीच बनियादी विभाजन को, श्रम अधिकारों को मान्यता देकर और एक ऐसा समाज बनाकर दुर किया जाना चाहिए, जहाँ सभी लोग अपने कौशल का उपयोग कर सकें।

श्रमिक-स्वामित्व वाली, नियंत्रित और स्व-प्रबंधित सहकारी समितियाँ आज कई कार्यस्थलों के मुल में, शोषणकारी और पदानुक्रमित संबंधों को बदलने का एक तरीका है। एकजुटता और पारस्परिक सहायता की अन्य प्रथाओं के साथ संयुक्त - जैसे कि समय बैंकिंग, सामुदायिक भूमि ट्रस्ट, वस्तु विनिमय या स्वैप बैठकें और शुन्य-ब्याज बैंकिंग - ये प्रथाएं एक नई तरह की अर्थव्यवस्था के लिए, नींव तैयार करने में मदद करती हैं। कुछ स्थानों पर, सार्वजनिक स्वामित्व भी उत्पादन को लाभ-संचालित और विकास-उन्मुख प्रणालियों और प्रक्रियाओं से दूर स्थानांतरित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ऊर्जा प्रणालियों में जहाँ लाभ-संचालित मॉडल वर्तमान में परिवर्तन को रोक रहे हैं वहाँ निजीकरण और सार्वजनिक स्वामित्व, परिवर्तन के प्रमुख चालक हो सकते हैं।

आज के श्रमिकों को यह निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए कि वे भविष्य में कैसे काम करेंगे। जनरल इलेक्ट्रिक में श्रमिकों की अभृतपूर्व हड़ताल जैसी श्रमिक कार्रवाइयाँ, जिसमें माँग की गई कि उत्पादन को कोविड-19 महामारी के दौरान रोगियों के इलाज के लिए तत्काल आवश्यक वेंटिलेटर की आपूर्ति के लिए निर्देशित किया जाए, यह समुदाय की भलाई के लिए सार्थक काम करने की इच्छा का एक शानदार उदाहरण है। इसी तरह भारतीय किसान आंदोलन की व्यापक लामबंदी कई अलग-अलग प्रकार के कार्यों में सभ्य जीवन और आजीविका के आसपास नए गठजोड़ की संभावनाओं को दर्शाती है। जस्ट ट्रांज़िशन को हर जगह श्रमिकों के हितों और आकांक्षाओं को - जिनमें अनौप चारिक, अवैतनिक, अनिश्चित, गैर-संघीय या अवैध स्थितियों में काम करने वाले लोग भी शामिल हैं -प्रकृति के साथ पुनर्योजी संबंध में सार्थक काम के लिए संघर्ष को केंद्र में रखना चाहिए।

# पुनरुत्पादक श्रम का न्यायपूर्ण वितरण

सतत और सार्थक काम के संघर्ष का केंद्र, उस भूमिका की मान्यता है जो अक्सर-अप्रत्याशित 'पुनरुत्पादक' कार्य हमारे समाज को बनाए रखने में निभाता है। बच्चों के पालन-पोषण से लेकर बड़ों की देखभाल तक; एक भूखे परिवार को खाना खिलाने से लेकर एक बीमार कर्मचारी की देखभाल तक: बगीचे के पोषण से लेकर पर्यावरणीय आपदा से बचाव तक, पुनरुत्पादक कार्य हमारे अस्तित्व के लिए महत्त्वपूर्ण है। फिर भी, बहत बार, इस प्रकार के श्रम को मान्यता नहीं दी जाती है और इसके लाभों को नियोक्ताओं द्वारा हडप लिया जाता है, जो श्रमिकों को दिए जाने वाले वेतन और सभ्य जीवन के बीच की दूरी को कम करने के लिए महत्त्वपूर्ण है. अक्सर महिलाओं और लिंग के गैर-अनुरूप लोगों से मुक्त श्रम पर निर्भर करते हुए श्रमिकों का अत्यधिक शोषण करते हैं। लोगों की रचनात्मक उत्तरजीविता रणनीतियों और 'करने' की तकनीकों का नियोक्ताओं के लिए अतिरिक्त लाभ के स्नोत के रूप में उपयोग किया जाता है। हाशिये पर धकेले जाने और शोषित होने के बजाय, सामाजिक प्रजनन और देखभाल के कार्य को हमारे समाज के केंद्र में रखा जाना चाहिए।

जस्ट ट्रांज़िशन का निर्माण, उनके लिंग या किसी अन्य कारण से हाशिए पर मौजुद लोगों द्वारा के दान किए गए या ज़ब्त किए गए श्रम पर नहीं किया जाना चाहिए। इस प्रकार, जस्ट टांजिशन के लिए इस बात पर गहराई से ध्यान देने की आवश्यकता है कि हमारा समाज हमारे शरीर, हमारे परिवारों, हमारी संस्कृतियों, हमारे समाजों और हमारे ग्रह के पुनरुत्पादन के लिए मौलिक कार्यों को कैसे वितरित करता है। हर लिंग और यौन रुझान के लोगों को मनुष्य के रूप में अपनी पुरी क्षमता का एहसास करने का अवसर प्रदान कीया जाना चाहिए। यह तभी संभव होगा जब हम पितृसत्तात्मक और लिंगवादी संरचनाओं पर काब पाने के लिए काम करेंगे जो व्यवस्थित रूप से प्रजनन कार्य को खारिज या कम महत्त्व देते हैं और इसे असंगत रूप से समाज के कम शक्तिशाली सदस्यों में स्थानांतरित कर देते हैं। साथ ही, यह इस महत्त्वपूर्ण कार्य के मुल्य के पुनर्मुल्यांकन की माँग करता है। एक उचित परिवर्तन के लिए यह पहचानने की आवश्यकता है कि कॉर्पोरेट सुपर-मुनाफे के लिए अदृश्य सब्सिडी के रूप में काम करने के बजाय, व्यक्तिगत, समुदाय और ग्रहीय अस्तित्व की ये प्रक्रियाएं हमारे समाज के केंद्र में होनी चाहिए।

#### अंतहीन आर्थिक विकास से परे

आज हम सभी मनुष्यों की मूलभूत आवश्यकताओं को पुरा करने के लिए पर्याप्त से अधिक भोजन और वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। हालाँकि, ये उत्पाद समान रूप से वितरित नहीं हैं। बहत से लोग जीवित रहने के लिए आवश्यक चीज़ों का उपभोग नहीं कर पाते हैं। इस बीच हमारी आर्थिक प्रणाली लगातार नई इच्छाओं को बढ़ावा दे रही है, उन लोगों की खपत बढ़ा रही है जो इसे वहन कर सकते हैं और दूसरों को वस्तओं की बिक्री से लाभ कमाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

हमें अपने द्वारा उत्पादित वस्तओं और उनके उत्पादन के प्रक्रिया को महत्त्व देना चाहिए. न कि सिर्फ़ लाभ की इच्छा को ध्यान में रखते हुए बल्कि लोकतांत्रिक तरीके से वास्तविक मानवीय जरूरतों को परा करने के लिए बदलना चाहिए। वैश्विक स्तर पर, न्यायसंगत, लोकतांत्रिक, समान उत्पादन के कार्यक्रम के लिए वैश्विक उत्तर के देशों में भौतिक खपत, ख़ासकर अमीर लोगों द्वारा, नाटकीय रूप से कमी की आवश्यकता होना लगभग तय है। यहाँ, निजी संपत्ति के बजाय सार्वजनिक समृद्धि विकसित करके बहत कुछ हासिल किया जा सकता है - किताबों की दुकानों के बजाय पुस्तकालय, रहने योग्य शहर और अत्यधिक अमीरों के लिए विलासितापूर्ण अवकाश के बजाय सार्वजनिक पार्क और ज्ञान के निजीकरण के बजाय सभी के लिए सार्थेक शिक्षा उपलब्ध होने चाहिए।

इस बीच, जो लोग जीवित रहने के साधनों तक पहुंचने के लिए संघर्ष करते हैं - जिनमें वैश्विक दक्षिण और उत्तर में हाशिए पर रहने वाले और उत्पीड़ित लोग भी शामिल हैं - वे अधिक उपभोग करने में सक्षम होंगे. साथ ही नए सार्वजनिक सामानों से भी लाभान्वित

होंगे। उत्पादन जिसका उद्देश्य गैर-मानवों और पारिस्थितिक तंत्र के साथ सम्मानजनक संबंध बनाए रखते हुए, हर इंसान की जरूरतों को पूरा करना है और हमें आर्थिक बाजारों को इस उम्मीद में, हर कीमत पर बढ़ना चाहिए कि (कुछ) मनुष्य को लाभ हो सकता है, यही विचार विनाशकारी तर्क से दूर जाने की अनुमित देगा। इस तर्क के विपरीत, लोगों और पारिस्थितिक तंत्र की जरूरतों को पहले रखना चाहिए और उस तर्क से परे, कदम उठाना चाहिए जो एक सीमित ग्रह पर अनंत विकास की माँग करता है।



# समुदाय आज जस्ट ट्रांज़िशन के दृष्टिकोण को कैसे व्यवहार में ला रहे हैं?

दुनिया भर में, विभिन्न समुदाय जस्ट ट्रांज़िशन के अपने स्वयं के दृष्टिकोण की खोज और विकास कर रहे हैं। यह खंड उत्तरी अमेरिका पर ध्यान केंद्रित करते हुए मामले के अध्ययन पर प्रकाश डालता है।

#### केस 1

#### द ग्रीन नई डील

'ग्रीन न्यु डील' (जी. एन. डी.) की अवधारणा और रूपरेखा 2000 के दशक की शुरुआत में ग्रीन पार्टी द्वारा एक क्रांतिकारी प्रस्ताव के रूप में शुरू हुई थी। डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट ऑफ अमेरिका (डी. एस. ए.) के कार्यकर्ताओं ने 2010 के मध्य में इस फ्रेमिंग को अपनाया और डी. एस. ए. सदस्य से न्यूयॉर्क कांग्रेस महिला बनीं अलेक्जेंड्रिया ओकासियो-कोर्टेज़ ने 2018 में अपने चुनाव के तुरंत बाद इसे राजनीतिक मुख्यधारा में पेश किया। न्यू डील, जस्ट ट्रांज़िशन रणनीतियों को आगे बढ़ाने वाले आंदोलनों के साथ प्रतिध्वनित हुई, क्योंकि मुल रूप से, जी. एन. डी. ने जोर देकर कहा कि जलवायु संकट को सही मायने में संबोधित करने के लिए हमारी अर्थव्यवस्था में मल रूप से निष्कर्षणवाद और शोषण को बदलने की आवश्यकता होगी।

ग्रीन न्यू डील प्रस्ताव का पारित होना एक बड़ी प्रगति थी, लेकिन इस सामान्य ढांचे को सरकार के लिए एक नुस्खे में अनुवाद करने के लिए एक शक्तिशाली सामाजिक आंदोलन की आवश्यकता होगी, जो उत्पादन और राजनीति दोनों में शक्ति संतुलन को स्थानांतरित कर सके। विशेष रूप से पेट्रो-रसायन उद्योग की असंगत शक्ति को कमजोर करना होगा, वरना जी. एन. डी. को ग्रीनवाशिंग टुल में बदल दिया जाएगा।

इससे बचने के लिए, समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठनों, विशेष रूप से श्रमिक वर्ग

समुदायों और ऐतिहासिक रूप से उत्पीड़ित लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठनों को, इसके विकास और कार्यान्वयन का नेतृत्व करना चाहिए। ऐसे संगठन पहले से ही जी. एन. डी. की चर्चाओं में सबसे आगे रहे हैं. जो ठोस सामग्री के साथ-साथ गहरी आलोचनाएं भी प्रदान करते हैं।

इस जटिल भूमिका को निभाने वाली प्रमुख ताकतों में से एक इट टेक्स रूट्स (आई. टी. आर.) एलायंस है, जो पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, माइक्रोनेशिया और प्यूर्टी रिको में काले, स्वदेशी और रंगीन फ्रंटलाइन (बी. आई. पी. ओ. सी.) समुदायों के लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाला गठबंधन है। गठबंधन के सदस्यों में क्लाइमेट जस्टिस अलायंस (सी. जे. ए.), ग्रासरूट्स ग्लोबल जस्टिस अलायंस (जी. जी. जे.), इंडिजिनस एनवायर्नमेंटल नेटवर्क (आई. ई. एन.) और राइट टू द सिटी अलायंस (आर. टी. टी. सी.) शामिल हैं। इट टेक्स रूट्स ने युनाइटेड फ्रंटलाइन टेबल के निर्माण में मदद की जिसने 'पुनर्योजी अर्थव्यवस्था के लिए लोगों की ओरिएंटेशन' को विकसित किया जिसने स्थानीय, राज्य, राष्ट्रीय और आदिवासी स्तरों पर 80 से अधिक नीतिगत हस्तक्षेप की पेशकश की। पीपल्स ओरिएंटेशन दस्तावेज़ में मांगों के व्यापक कार्यक्रम को पुनर्योजी अर्थव्यवस्था के लिए पंद्रह बिंदुओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो एक ग्रीन न्यु डील प्रदान कर सकता है। इस तरह की बड़े पैमाने पर संरचनात्मक सुधार लड़ाई वास्तव में श्रमिकों, समुदायों और पर्यावरण के लिए न्याय में निहित है। प्रत्येक नीतिगत हस्तक्षेप को चार व्यापक रुखों में बांटा गया है:

- 1. रक्षा: वायु, भूमि, जल और समुदाय निकायों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए और रक्षा करनी चाहिए।
- 2. मरम्मत: समाधानों को, निष्कर्षण अर्थव्यवस्था के अतीत और उससे चल रही हानियों की मरम्मत करनी चाहिए।
- 3. निवेश: समाधानों को गैर-निष्कर्षणात्मक और न्यायसंगत निवेश को समुदायों और श्रमिकों तक पहंचाना चाहिए।
- 4. परिवर्तन: समाधानों को संबंधों और संरचनाओं को बदलने की नींव प्रदान करनी चाहिए ताकि वे सम्मान, समानता और न्याय में निहित हों।

ग्रीन न्यू डील के आसपास जमीनी स्तर के आंदोलनों का हस्तक्षेप महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि, जैसा कि इस प्राइमर में चर्चा की गई है, कई लोग वास्तविक न्याय को ध्यान में रखे बिना जस्ट ट्रांज़िशन शब्द का उपयोग करते हैं। उप-राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण पहल - जैसे जस्ट ट्रांज़िशन अलास्का, ओरेगॉन ग्रीन न्यू डील, कैलिफ़ोर्निया ग्रीन न्यू डील, दक्षिणी राज्यों में ग्रीन न्यू डील गठबंधन के लिए मेन और खाड़ी दक्षिण के लिए ग्रीन न्यू डील स्थापित करने का एक अधिनियम - परिवर्तन को आगे बढ़ाने और आकार देने में भी मदद कर रहे हैं। पनर्योजी अर्थव्यवस्था में उचित परिवर्तन में निहित कोई भी गंभीर ग्रीन न्य डील प्रयास एक समावेशी प्रक्रिया होनी चाहिए जो नीचे से ऊपर और स्थानीय रूप से संचालित हो।

### सहयोग जैक्सन और जैक्सन जस्ट ट्रांज़िशन योजना

जैक्सन एक संकटग्रस्त शहर है। जैसा कि इसके दिवंगत मेयर चोकवे लुंबा के प्रशासन ने कहा था: 'जैक्सन, कई शहरी केंद्रों की तरह, दशकों से चले आ रहे आर्थिक विनिवेश, गैर-औद्योगिकीकरण, पुरातन और खस्ताहाल बुनियादी ढाँचा, घटते कर आधार, पुरानी बेरोजगारी और खराब प्रदर्शन वाले स्कलों से उभरने के लिए संघर्ष कर रहा है। जैक्सन एक ऐसा शहर भी है जो कई पर्यावरणीय नस्लवाद चुनौतियों का सामना कर रहा है जो एक सतत स्वास्थ्य संकट और मानव अधिकारों के उल्लंघन का कारण बनता है। दख की बात है कि जैक्सन, मिसिसिपी राज्य में, जलवायु परिवर्तन में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है। यह ऊर्जा प्राप्त करने और उपभोग करने का प्रत्यक्ष परिणाम है क्योंकि शहर और उसके आसपास के प्रमख उद्योग टुकिंग, रेलमार्ग और हवाई माल परिवहन पर निर्भर हैं।

अपने शहर में जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए और अपने बच्चों, पोते-पोतियों और परपोते-पोतियों की खातिर हम अपने सामने आने वाले व्यापक पर्यावरणीय, जलवायु और मानवाधिकार संकटों को समाप्त कर सकते हैं और करना ही चाहिए। सहयोग जैक्सन का मानना है कि हम अपने समदायों को एक व्यापक कार्यक्रम निष्पादित करने के लिए संगठित करके, इन संकटों को हल कर सकते हैं जो हमारे पर्यावरण की रक्षा करेगा, हमारे कार्बन उत्सर्जन पर अंकश लगाएगा, रोजगार को प्रोत्साहित करेगा और लोकतांत्रिक तरीके से धन और इक्विटी का हस्तांतरण करेगा।

हम इस व्यापक कार्यक्रम को एक जस्ट ट्रांज़िशन कार्यक्रम मानते हैं जो हाइड्रोकार्बन उद्योग पर व्यवस्थित निर्भरता और सीमित संसाधनों वाले ग्रह पर पुंजीवादी-संचालित अंतहीन विकास की आवश्यकता को समाप्त करने पर आधारित है। इसके बजाय, हम एक नई, लोकतांत्रिक अर्थव्यवस्था बना सकते हैं जो उत्पादन और वितरण के टिकाऊ तरीकों पर केंद्रित है जो अधिक स्थानीयकत और सहकारी स्वामित्व और नियंत्रित हैं। जस्ट ट्रांज़िशन प्रोग्राम में सहयोग जैक्सन का विशिष्ट योगदान हमारा सस्टेनेबल कम्युनिटीज़ इनिशिएटिव (एस. सी. आई.) है, जिसके तीन प्राथमिक घटक हैं:

## 1. हरित सहकारी समितियाँ

हम जानबूझकर एक सहकारी इको-सिस्टम बनाने में लगे हुए हैं जो खुद को मजबूत और निर्मित करता है। अब तक तीन सहकारी समितियों के साथ, हमने एक मजबूत मुल्य श्रुंखला बनाई है: फ्रीडम फ़ार्म्स स्थानीय स्तर पर बेचे और जो उपभोग किए जाने वाले भोजन का उत्पादन करता है, जिसके कचरे का उपयोग ग्रीन टीम द्वारा जैविक खाद बनाने के लिए किया जाता है, जो खेत में वापस आ जाता है। यह उन टिकाऊ और पुनर्योजी उद्यमों और प्रणालियों का एक उदाहरण है जिनका हम निर्माण कर रहे हैं।

#### 2. एक इकोविलेज का निर्माण

इको-विलेज वेस्ट जैक्सन में एक स्थायी लाइव-वर्क समुदाय के निर्माण पर केंद्रित है। इको-विलेज कोऑपरेशन जैक्सन द्वारा बनाए गए और वेस्ट जैक्सन के निवासियों द्वारा नियंत्रित सामुदायिक भूमि ट्रस्ट (सी. एल. टी.) द्वारा स्थित और संरक्षित किया जाएगा। यह कई एकीकत और अन्योन्याश्रित सहकारी उद्यमों के माध्यम से किफायती सहकारी आवास और नौकरियां प्रदान करेगा जो समुदाय के भीतर स्थित होंगे, जिनमें शहरी फार्म, खाद संचालन और एक किराने की दुकान, बच्चों की देखभाल, सौर-थर्मल स्थापना और रखरखाव, सुरक्षा, कला और संस्कृति शामिल हैं।

## 3. जस्ट ट्रांज़िशन नीति सुधार

जस्ट ट्रांज़िशन पहल का व्यापक घटक ऐसी नीतियों को स्थापित करने पर केंद्रित है जो पारिस्थितिक विनाश और जलवायु परिवर्तन पर अंकुश लगाती हैं और हमारे शहर में स्थायी नौकरियों और सहकारी उद्यमों के निर्माण को प्रोत्साहित करती हैं। हम शहर सरकार को ऐसी नीतियां बनाने के लिए प्रतिबद्ध करके, जो जैक्सन को 2030 तक शून्य-उत्सर्जन और शून्य-अपशिष्ट शहर बनने में सक्षम बनाएंगी, जैक्सन को देश का नहीं तो दक्षिण का सबसे सतत शहर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

#### केस 3

#### उत्तरी अफ्रीका में टांज़िशन

उत्तरी अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान को आमतौर पर एक विशाल खाली भूमि के रूप में वर्णित किया जाता है। वैकल्पिक रूप से, इसे नवीकरणीय ऊर्जा का एल्डोरैडों माना जाता है जो युरोप को ऊर्जा प्रदान करता है ताकि एक असाधारण उपभोक्तावादी जीवन शैली और अत्यधिक ऊर्जा खपत जारी रह सके। हालाँकि, ये भ्रामक आख्यान स्वामित्व और संप्रभुता के सवालों को नजरअंदाज करते हैं और वर्चस्व के चल रहे वैश्विक संबंधों को छिपाते हैं जो संसाधनों की लुट, आम लोगों के निजीकरण, समुदायों की बेदखली और ऊर्जा संक्रमण को नियंत्रित करने के बहिष्कृत तरीकों को सुविधाजनक बनाते हैं।

उत्तरी अफ्रीकी क्षेत्र के उदाहरण दिखाते हैं कि कैसे हरित उपनिवेशवाद या हरित हड़पने के रूप में नवीकरणीय ऊर्जा के संक्रमण में भी ऊर्जा उपनिवेशवाद को पुन: उत्पन्न किया जाता है। दक्षिणी मोरक्को में 2016 में लॉन्च किया गया उआरज़ाज़ेट सोलर प्लांट, जिनकी भूमि का उपयोग 3,000 हेक्टेयर के सोलर प्लांट के लिए बिना सहमति के किया गया था, उन अमाज़ी कृषि-पशुपालक समुदायों को न्याय दिलाने में विफल रहा है। इसके अलावा, यह परियोजना एक सार्वजनिक निजी भागीदारी (पी. पी. पी.) है जिसे विश्व बैंक और युरोपीय निवेश बैंक सहित अन्य जगह से 9 अरब डॉलर से अधिक उधार लेकर वित्तपोषित किया

गया है। यह ऋण मोरक्को सरकार की गारंटी द्वारा समर्थित है, जिसका अर्थ है कि पहले से ही अत्यधिक बोझ वाले देश के लिए संभावित रूप से अधिक सार्वजनिक ऋण। 2016 में अपनी शरुआत के बाद से. यह परियोजना लगभग 80 मिलियन यरो का वार्षिक घाटा दर्ज कर रही है जिसकी भरपाई वहाँ की सरकार को करनी पड रही है। अंत में, परियोजना संकेंद्रित थर्मल पावर (सी. एस. पी.) का उपयोग कर रही है जिसके लिए सिस्टम को ठंडा करने और पैनलों को साफ करने के लिए पानी के व्यापक उपयोग की आवश्यकता होती है। उआरज़ाज़ेट जैसे अर्ध-शुष्क क्षेत्र में, ऐसे क्षेत्र से पीने के पानी और कृषि के लिए पानी को सोलर प्लांट के लिए मोड देना बेहद अन्यायपर्ण है।

इस बीच, ट्युनीशिया में, नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र का निजीकरण करने और विदेशी निवेशकों को, देश में हरित ऊर्जा का उत्पादन करने के लिए भारी प्रोत्साहन देने पर जोर दिया जा रहा है - जिसमें निर्यात भी शामिल है। नवीकरणीय ऊर्जा कानून ऐसे देश में नवीकरणीय परियोजनाओं के लिए कृषि भूमि के उपयोग की भी अनुमित देता है जो तीव्र खाद्य निर्भरता से ग्रस्त है। ऐसा ऊर्जा परिवर्तन वास्तव में किसके लिए लाभदायक है?

पुरे क्षेत्र में, विभिन्न निर्यात-उन्मुख परियोजनाओं को विदेशी लोगों द्वारा आगे बढ़ाया और प्रचारित किया जा रहा है, जिसका लक्ष्य यूरोप को कम लागत वाली बिजली प्रदान करना है। ये संभावित रूप से नए बलिदान क्षेत्र बनातें हुए यूरोपीय संघ की ऊर्जा सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं। तथाकथित हरित हाइड्रोजन पर हालिया प्रचार ऐसी ही एक और सीमा का प्रतिनिधित्व करता है।

उत्तरी अफ़्रीका के लिए जस्ट ट्रांज़िशन बहुत अलग दिखाई देगा, जिसमें स्थानीय समुदायों की ज़रूरतों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, युरोप और अन्य साम्राज्यवादी शक्तियों के साथ निर्भरता के संबंधों को समाप्त किया जाएगा और ऊर्जा पर वास्तविक लोकतांत्रिक नियंत्रण की दिशा में क्षेत्र की राजनीति (और अन्य) प्रणालियाँ में एक बनियादी परिवर्तन किया जाएगा।

#### केस 4

## बांधों से प्रभावित लोगों का आंदोलन (एम. ए. बी.)

बांधों से प्रभावित लोगों का आंदोलन (एम. ए. बी., इसके पुर्तगाली संक्षिप्त नाम के लिए) का जन्म ब्राजील में परिवारों और समुदायों को विस्थापित करने वाले बड़े पैमाने पर जलविद्युत बांधों के निर्माण का विरोध करने के लिए, एक सामाजिक आंदोलन के रूप में हुआ था। 1990 के दशक तक यह संघर्ष राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों को लक्षित करता था और व्यक्तिगत समस्याओं पर केंद्रित था। हालाँकि, नवउदारवाद के आगे बढने के साथ हमें खद को एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में पनर्गठित करने, एक अलग ऊर्जा मॉडल बनाने की

आवश्यकता महसूस हुई: एक लोगों की ऊर्जा प्रणाली जिसमें धन पुनर्वितरण के लक्ष्य के साथ पानी और ऊर्जा को सार्वजनिक और सामुदायिक रूप से नियंत्रित किया जाएगा।

हमने ब्राज़ील में ऊर्जा मॉडल द्वारा बनाई गई असमानताओं का एक महत्त्वपूर्ण विश्लेषण विकसित किया, जिसके कारण अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली के हाथों में धन का उच्च संकेंद्रण पैदा कर दिया था। हमने ऊर्जा परिवर्तन की आवश्यकता के साथ इस मॉडल का सामना किया। इसलिए, हमने केवल ऊर्जा के स्रोतों को ही नहीं, बल्कि संपूर्ण ऊर्जा प्रणाली को बदलने की आवश्यकता से शुरुआत की। यदि हम, एक समाज के रूप में, उस ऊर्जा नीति पर चर्चा नहीं करते हैं जो बिजली उत्पादन को व्यवस्थित और संरचना करती है, तो नवीकरणीय प्रौद्योगिकियां (जैसे हाइड्रो-इलेक्ट्रिक) मॉडल को बनाए रखने वाली अनुचित संरचनाओं में बदलाव नहीं हो पायेगा। इस तरह, भले ही सौर और पवन ऊर्जा को स्वच्छ ऊर्जा माना जाता है, लेकिन वे स्वचालित रूप से ऊर्जा तक समान पहंच या धन के वितरण का वादा नहीं करते हैं। इस प्रकार, हम मुख्य प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करते हैं: ऊर्जा किस लिए? और किसके लिए?

ब्राज़ील का मामला दिखाता है कि कैसे निजी नियंत्रण पर आधारित एक ऊर्जा प्रणाली, जिस पर वित्तीय पंजी और इसके लिए कब्ज़ा की गई संस्थाओं का प्रभुत्व है, ऐसी ऊर्जा प्रणाली लोगों की सेवा नहीं करती है। ब्राज़ील में ऊर्जा कंपनियों ने एक टैरिफ प्रणाली अपनाई जिसने सबसे अधिक विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को अधिकार दिया और आबादी को अत्यधिक ऊंची कीमतों से दंडित किया। हालाँकि ऊर्जा स्रोतों में बदलाव महत्त्वपूर्ण है, लेकिन यह जस्ट ट्रांज़िशन के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके बजाय, ऊर्जा परिवर्तन का मतलब अनिवार्य रूप से बाजार मॉडल पर काबु पाना, समाज और पुंजीवाद को गहराई से बदलना है।

हमारी ऊर्जा परिवर्तन परियोजना में दूसरा प्रमुख तत्व ऐतिहासिक विषयों को मजबूत करना और विकसित करना है जो इसे आगे बढा सकते हैं। लोकप्रिय भागीदारी और लोगों की लोकतांत्रिक शक्ति ऊर्जा परिवर्तन के लिए महत्त्वपूर्ण है। हमने इसे विकसित करने के लिए दो मोर्चों पर काम किया। लैटिन अमेरिकी स्तर पर, बढते निष्कर्षणवाद और नए बांधों के निर्माण का विरोध करने के लिए हमने अन्य आंदोलनों के साथ मिलकर बांधों से प्रभावित लोगों के आंदोलन (MAR, स्पेनिश में इसके संक्षिप्त नाम से) का निर्माण किया। एक लंबी प्रक्रिया के बाद, हमारे पास लैटिन अमेरिका में ऊर्जा प्रणाली की वास्तकला का एक सिंहावलोकन है, जो हमें बड़ी परियोजनाओं और कंपनियों के खिलाफ अधिक समन्वित और प्रभावी कार्रवाई करने की अनमति देता है।

ब्राज़ील में, तेल, बिजली, शहर, शिक्षा और जल क्षेत्रों के श्रमिकों के साथ मिलकर, हमने ऊर्जा और जल पर श्रमिक और किसान मंच (POCAE, इसके पूर्तगाली संक्षिप्त नाम के

लिए) का भी निर्माण किया ताकि हम पुरी आबादी के साथ एक सामृहिक संघर्ष का निर्माण कर सकें। इस प्रक्रिया के केंद्र में, हम लोगों की ऊर्जा परियोजना पर काम कर रहे हैं, परिवर्तन के अपने मॉडल का परीक्षण कर रहे हैं। सामृहिक कार्य के पहले दस वर्षों में हमने, ऊर्जा संप्रभुता के लिए, निजीकरण के खिलाफ, वृद्धि और उच्च कीमतों के खिलाफ और ऊर्जा क्षेत्र में उत्पन्न धन के उचित उपयोग के लिए कई सामृहिक संघर्षों को बढ़ावा दिया है।

हमारा मानना है कि ऊर्जा परिवर्तन को प्रभावी ढंग से लागु करने के लिए हमें संरचनात्मक, नीति और आर्थिक कारकों को समझने और उनका समाधान करने की आवश्यकता है। लेकिन हम सीधे ऊर्जा स्रोतों को विकेंद्रीकृत बिजली उत्पादन के हमारे प्रस्ताव के माध्यम से बदलने के लिए भी काम करते हैं, उदाहरण के लिए सेर्टाओ माइनिरो क्षेत्र में एक जलविद्यत संयंत्र, प्रोजेक्ट वेरेडा सोल ईलारेस द्वारा बनाई गई झील पर सौर पैनलों की स्थापना। इस परियोजना में, बांध से प्रभावित 1200 परिवार सहकारी तरीके से स्वयं का सौर ऊर्जा उत्पादन कर रहे हैं और खुद को ऊर्जा की आपूर्ति करेंगे, जो आज तक उनके पास नहीं है। वे एकीकृत नेटवर्क को अतिरिक्त ऊर्जा बेचकर अपनी आय भी बढ़ाने में सक्षम होंगे। इस तरह, हम नए पर्यावरणीय प्रभाव पैदा नहीं करेंगे, क्योंकि हम मौजुदा झील का लाभ उठाएंगे और उन लोगों को ऊर्जा वितरित करेंगे जिन्हें इसकी आवश्यकता है। उम्मीद यह है कि सामुदायिक ऊर्जा उत्पादन को दोहराया और प्रोत्साहित किया जा सके, परिवारों और आंदोलन के लिए अधिक स्वायत्तता पैदा की जा सके, प्रणालीगत परिवर्तन के लिए संघर्षों को सब्सिडी देना जारी रखा जा सके।



चित्र का श्रेय: ग्रासरूट्स ग्लोबल जस्टिस



# जस्ट ट्रांज़िशन का भविष्य क्या है?

कोविड-19 महामारी और उस पर सरकारों की प्रारंभिक प्रतिक्रिया से पता चला कि राजनीतिक इच्छाशक्ति होने पर सामृहिक संसाधन बेहद तेजी से जुटाए जा सकते हैं। फिर भी सार्वजनिक धन और राज्य शक्ति का असमान उपयोग, अल्पकालिक, अक्सर अलोकतांत्रिक और कभी-कभी पुरी तरह से सत्तावादी थी जो श्रमिकों के लिए हानिकारक था। जस्ट ट्रांज़िशन ऊपर से नीचे की प्रक्रिया नहीं होगी और न ही हो सकती है। बल्कि. इसके लिए विभिन्न प्रकार के श्रमिकों के विभिन्न आंदोलनों की आवश्यकता है - ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में, वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण में, विभिन्न नस्लीय और हाशिए पर रहने वाले समदायों में, भगतान किए गए, औपचारिक, अनौपचारिक या अवैतनिक कार्यों में -एक साथ आने और निर्माण करने के लिए वे किस प्रकार का भविष्य चाहते हैं और अपनी सरकारों से उनके दृष्टिकोण का समर्थन करने की माँग करते हैं।

इसके लिए अभृतपूर्व स्तर के सहयोग, एकजुटता और कई बाधाओं के पार आम संघर्ष की आवश्यकता होगी। यह एक जटिल प्रक्रिया होगी, जो हर जगह अलग होगी और इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक, सुक्ष्म कार्य शामिल होगा जो नए शोषण और हाशिए के संबंधों का निर्माण नहीं करेंगे। लेकिन, आज दुनिया भर के आंदोलनों में इस तरह के प्रतिरोध और अभिसरण के अनगिनत आशाजनक और प्रेरक उदाहरण हैं। 2021 में भारतीय किसान आंदोलन की शानदार जीत से लेकर एकजुटता और साहस, अनिगनत आम लोगों को कोविड-19 महामारी की अव्यवस्था और भय के बीच हम देख सकते हैं कि लोग, कौशल और बदलाव लाने की क्षमताएं दुनिया भर के श्रमिक लोगों के समुदायों और आंदोलनों में पहले से मौजद हैं। जस्ट ट्रांजिशन का भविष्य एकजट होकर बनाया जाएगा।

# जस्ट ट्रांज़िशन पर अध्ययन और प्रेरणा के श्रोत:

- जस्ट ट्रांज़िशन अलायन्स (1997) प्रिंसिपल ऑफ़ जस्ट ट्रांज़िशन https://jtalliance.org/what-is-just-transition/
- इंडिजेनस एनवायर्नमेंटल नेटवर्क (2017) इंडिजेनस प्रिंसिपल ऑफ़ जस्ट ट्रांज़िशन https://www.ienearth.org/justtransition/
- क्लाइमेट जस्टिस अलायन्स (2017) जस्ट ट्रांज़िशन: ए फ्रेमवर्क फॉर चेंज https://climatejusticealliance.org/just-transition
- मुवमेंट ट्रांज़िशन (2017) जस्ट ट्रांज़िशन ज़ायिन https://movementgeneration.org/justtransition/
- सी. इस. ए. टी. यु. सी. ए. (2018) डिक्लेरेशन ऑफ़ थर्ड रीजनल कांफ्रेंस ऑन एनर्जी, एनवायरनमेंट एंड वर्क https://csa-csi.org/wpcontent/uploads/2018/10/16\_10\_2018-DECLARACION-FINAL-CREAT-IN.pdf
- ग्राउंडवर्क (2019) डाउन टू जीरो: द पॉलिटिक्स ऑफ़ जस्ट ट्रांज़िशन https://groundwork.org.za/wp-content/uploads/2022/07/down-tozero.pdf
- ट्रेड युनियन फॉर एनर्जी डेमोक्रेसी (2019) वर्किंग पेपर #11 ट्रेड युनियन एंड एनर्जी डेमोक्रेसी https://unionsforenergydemocracy.org/resources/tuedworking-papers/tued-working-paper-11/
- लेबर नेटवर्क फॉर सस्टेनेबिलिटी (एन. डी.) ए जस्ट ट्रांज़िशन https://www.labor4sustainability.org/post/a-just-transition
- एशिया युरोप पीपल्स फोरम (2020) लाहौर रिपोर्ट: टुवर्ड्स ए जस्ट ट्रांज़िशन https://aepf.info/AEPF-Lahore
- ट्रांसनेशनल इंस्टिट्यट (2020) जस्ट ट्रांज़िशन: हाऊ एनवायरनमेंट जस्टिस आर्गेनाइजेशन एंड ट्रेड युनियन आर कमिंग टुगेदर फॉर सोशल एंड एनर्जी ट्रान्सफोर्मशन https://www.tni.org/en/justtransition
- फ्रेंड्स ऑफ़ द अर्थ इंटरनेशनल (2021) इफ इट्स नॉट फेमिनिस्ट, इट्स नॉट जस्ट https://www.foei.org/publication/if-its-not-feminist-its-not-just/
- सी. यु. टी. ब्राज़ील (2021) जस्ट ट्रांज़िशन: ए ट्रेड यूनियन प्रपोसल टू एड्रेस द क्लाइमेट एंड सोशल क्राइसिस
  - https://www.cut.org.br/acao/download/3719ee96b667057b112a1fd5d1 2d2542
- ट्रांसनेशनल इंस्टिट्युट (2022) जस्ट ट्रांज़िशन इन नॉर्थ अफ्रीका https://longreads.tni.org/just-transition-in-north-africa

- 1.बर्नस्टीन, एच. (2010)। क्लास डायनामिक्स इन अग्रेरियन चेंज। हैलिफ़ैक्स, नोवा स्कोटिया: फ़र्नवड
- 2. मीक्सिन्स वुड, ई. (1999), द ओरिजिन ऑफ कैपिटलिज्म: ए लॉनार व्य
- 3. फॉसिल कैपिटल (2016) में एंडियास माल्म का तर्क है कि इस पुनर्गठन और उत्पादन को बढाने के कछ हिस्से जीवाश्म ईंधन (जल ऊर्जा का उपयोग करके) से पहले ही चल रहे थे, लेकिन जीवाश्म ईंधन ने कारखाने के मालिकों को श्रमिकों पर हावी होने की क्षमता को बडे पैमाने पर बढ़ा दिया, जिससे उन्हें इच्छानुसार विनिर्माण स्थानांतरित करने की अनुमति मिली
- 4. हार्वे, डी. (2003)। एक्युमुलेशन बी डिस्पोसेशन. इन द न्यू इम्पेरिअलिस्म. ऑक्सफोर्ड यनिवरसिटि प्रेस।
- 5. मूर, जे. डब्ल्यू. (2017)। कैपिटलोसीन, पार्ट I: ऑन द नेचर एंड ओरिजिन ऑफ़ आवर इकोलॉजिकल क्राइसिस। द जर्नल ऑफ़ पीजेन्टस स्टडीज, 44(3), 594-630।
- 6.फ्रेज़र, एन. (2017) 7. बिहाइंड मार्क्स हिडेन अबोड: फॉर ऐन एक्सपैंडेड कन्सेप्शन ऑफ़ कैपिटलिज्म. क्रिटिकल थ्योरी इन क्रिटिकल टाइम्स (पीपी. 141-159) में। कोलंबिया यनिवर्सिटी प्रेस.
- 7. कार्टन, कार्बन युनिकॉर्न्स कार्टन, डब्ल्यू. (2020)। कार्बन युनिकॉर्न एंड फॉसिल फ्युचर्स। हुज़ एम्मिशन रिडक्शन पैथवेज़ आई. पी. सी. सी. इज़ परफार्मिंग?
- 8. उदाहरण देखें माल्म, ए. (2016) फॉसिल कैपिटल: द राइज़ ऑफ़ स्टीम पावर एंड द रूट्स ऑफ़ ग्लोबल वार्मिंग, वर्सो; मूर, जे. (2015) कैपिटलिज्म इन वेब ऑफ़ लाइफ: इकोलॉजी एंड द एक्यूमुलेशन ऑफ़ कैपिटल, वर्सो; ह्युबर, मैट (2013) लाइफब्लड: ऑयल, फ्रीडम, एंड द फोर्सेस ऑफ कैपिटल, युनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस; रॉडने, डब्ल्यू. (1972), हाउ यरोप अंडरडेवलप्ड अफ़्रीका।
- 9. ह्यबर, एम. टी. और मैक्कार्थी, जे. (2017)। बियॉन्ड द सबटेरेनियन एनर्जी रेजीम? फ्यूल, लैंड एंड प्रोडक्शन स्पेस । ट्रांजेक्शन ऑफ़ द इंस्टिट्यट ऑफ़ ब्रिटिश जिओग्राफर्स, 42(4), 655-668 I
- 10.यदि ऐतिहासिक उत्सर्जन को ध्यान में रखा जाए, तो अमेरिका एक स्पष्ट नेता है, जो 1750 के बाद से लगभग 20 प्रतिशत उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार है।
- 11.कार्टन-विम, डब्ल्य. (2020)। कार्बन युनिकॉर्न एंड फॉसिल फ्यूचर्स । हुज़ एम्मिशन रिडक्शन पैथवेज आई. पी. सी. सी. इज परफार्मिंग?





ग्रासरूट्स ग्लोबल जस्टिस अलायंस (जीजीजे) 60 से अधिक जमीनी स्तर के आधार निर्माण संगठनों का एक बहु-नस्लीय, बहु-क्षेत्रीय गठबंधन है जो जलवायु, लिंग और नस्लीय न्याय, सैन्यवाद विरोधी और एक नारीवादी, नस्लवाद विरोधी और पुनर्योजी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के लिए एक लोकप्रिय आंदोलन का निर्माण कर रहा है। हमारा काम अंतर्राष्ट्रीयवादी, अंतरपीढ़ीगत, मिश्रित लिंग आधारित और उत्तरी अमेरिका में अग्रणी स्वदेशी, लैटिन, एशियाई, प्रशांत द्वीप वासियों, अरब और श्वेत श्रमिक वर्ग के लोगों के नेतृत्व में निहित है।



ट्रांसनेशनल इंस्टीट्यूट (टीएनआई) एक अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान और वकालत संस्थान है जो एक न्यायसंगत, लोकतांत्रिक और टिकाऊ ग्रह के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। लगभग 50 वर्षों से, टीएनआई ने सामाजिक आंदोलनों, समर्पित विद्वानों और नीति निर्माताओं के बीच एक अद्वितीय गठजोड़ के रूप में कार्य किया है।



बिरसा 1990 में गठन किया गया है। बीते 32 वर्षों से बिरसा झारखंड के विभिन्न जिलों में आदिवासी-मूलवासी, वन आश्रित समुदाय के विभिन्न मुद्दों एव समस्याओं का हल व विभिन्न झारखंड की अस्मिता को मजबूती से आगे बढ़ाने के लिए कार्य कर रही है।

> बिंदराई इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च स्टडी एंड एक्शन (बिरसा) गद्दीटोला, चाईबासा, पश्चिम सिंहभूम, झारखंड